



# सच्च्वी

# नम्राज

## नीयत नामा 19 सूरह

## दुआएगजुलअश

**MUSHAHID  
BOOK DEPOT**

مشہد بک ڈپوٹ

29A, Zakaria Street, 1st Floor, Kolkata-73  
Ph.: 033 22343406 / 22354268



# इस्लामी कलिमो

## (१) कलिमा तस्यिब-

लाइला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ

## (२) कलिमा शहादत-

अशहदु अल्ला इला ह इल्लल्लाहु वहदहु ला शरी क लहु व  
अशहदु अन्न मुहम्मदन् अब्दु हू व रसूलु हू

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

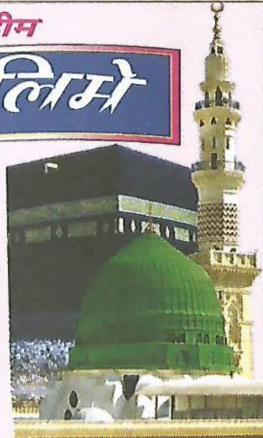
## (३) कलिमा तम्जीद-

सुब्हा नल्लाहि वल्लह्मु लिल्लाहि व लाइला ह इल्लल्लाहु  
वल्लाहु अकबर व ला हौ ल व ला कुव्व त इल्ला बिल्लाहिल  
अलीइल अज़ीम

سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ  
وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ

## (४) कलिमा तौहीद-

ला इला ह इल्लल्लाहु वहदहु ला शरी क लहु लहुल मुल्कु व  
लहु लह्मु युहयी व युमीतु व हु व हय्युल् ला यमूतु अब दन  
अबदा जुल्जलाल वल्इक्रामि बि यदि हिलखैरु व हु व अला  
कुल्ले शईन् कदीर



لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْخَصْمُ وَيُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ  
حَيٌّ لَا يَمُوتُ أَيْدِ الْبَدَاذِلِ وَالْأَكْرَامِ سَيِّدِ الْخَيْرِ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

## (५) कलिमा इस्तराफार-

अस्तगु फिरुल्ला ह रब्बी मिन् कुल्लि जम्बिन् अज़् नबुहु  
अमदन् औ खता अन् सिररन् औ अलानि य तँव व अतूबु इलौहि  
मिनज्जम्बिल् लज़ी आअ लमु व मिनज्ज जम्बिल्लज़ी ला  
आअलमु इन्न क अन् त अल्लामुल गोयूबि व सत्तारुल्  
ओयूबि व गफ़फ़ारुल् जुनूबि व ला हौ ल व ला कूव्वत इल्ला  
बिल्लाहिल अलिई ल अज़ीम।

أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ رَبِّي مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ أَذْنِبْتُهُ عَمْدًا أَوْ خَطَايَا أَوْ عِلَاقَةً  
وَأَتُوبُ إِلَيْهِ مِنَ الذَّنْبِ الَّذِي أَعْلَمُ وَمِنَ الذَّنْبِ الَّذِي لَا أَعْلَمُ إِنَّكَ أَنْتَ  
عَلَّامُ الْغُيُوبِ وَسَتَّارُ الْعُيُوبِ عَفَّارُ الذُّنُوبِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ

## (६) कलिमा रददे कुफ-

अल्ला हुम् म इन्नी अऊजु बि क मिन अन् उश रि क बि क  
शैअवँ व अना आअलमु बिही व अस्तगु फिरु क लिमा ला  
अअलमु बिही तुब्तु अन्हु व तबराअतु मिनल् कुफरि  
वशिशकि वल् किज्बि वल् गीबति वल् बिदअति वन्नमोमति  
वल्फवाहिशि वल्बुहतानि वल् मआसी कुल्लिहा व अस्लम्तु  
व आ मनतु व अकूलु ला इला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ أَنْ أَفْرُكَ بِكَ شَيْئًا وَأَنَا أَعْلَمُ بِهِ وَأَسْتَغْفِرُكَ  
لِمَا لَا أَعْلَمُ بِهِ تَبَّتْ عَنْهُ وَتَبَرَّاتُ مِنَ الْكُفْرِ وَالشِّرْكِ وَالْكَذِبِ وَالْغَيْبَةِ وَالْبِدْعَةِ  
وَالنَّوْمَةِ وَالْفَوَاحِشِ وَالْبَهْتَانِ وَالْعُلُوقِ كُلِّهَا أَسْلَمْتُ وَأَمَنْتُ وَأَقُولُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ  
مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ



## ईमाने मुजमल-

आमन्तु बिल्लाहि कमा हु व बि असमाएही व सिफातिही व कबिल्तु जमी अ अहकामिही

أَمَنْتُ بِاللَّهِ كَمَا هُوَ بَيَّنَّاهُ وَصَفَّاهُ وَقَبِلْتُ جَمِيعَ أَحْكَامِهِ

## ईमाने मुफरसल-

आमन्तु बिल्लाहि व मला इ क तिही व कु तु बिही व रुसुलेही वल यौमिल आखिरे वल कदरि खैरेही व शरैहि मिनल्लाहि तआला वल बाअसि बाअदल मौति

أَمَنْتُ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَالْقَدَرِ خَيْرُهُ وَشَرُّهُ مِنْ اللَّهِ تَعَالَى وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ

## नमाज़ों की नीयत (अर्बी और हिन्दी में)

### नमाज़े फ़ज्र की दो रकअत सुन्नत-

نَوَيْتُ أَنْ أَصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى رَكْعَتَي صَلَاةِ الْفَجْرِ سُنَّةَ رَسُولِ اللَّهِ مُتَوَجِّهًا إِلَى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ फ़ज्र की सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआला के रूख मेरा काअबा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर

### फ़ज्र की

दो रकअत फ़र्ज-

نَوَيْتُ أَنْ أَصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى رَكْعَتَي صَلَاةِ الْفَجْرِ فَرَضَ اللَّهُ تَعَالَى مُتَوَجِّهًا إِلَى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ फ़ज्र की फ़र्ज वास्ते अल्लाह तआला के रूख मेरा काअबा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर

## जुहर की चार रकअत सुन्नत

نَوَيْتُ أَنْ أَصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى أَرْبَعَ رَكْعَاتٍ صَلَاةِ الظُّهْرِ سُنَّةَ رَسُولِ اللَّهِ مُتَوَجِّهًا إِلَى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने चार रकअत नमाज़ जुहर की सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआला के रूख मेरा काअबा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर

## जुहर की चार रकअत फ़र्ज

نَوَيْتُ أَنْ أَصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى أَرْبَعَ رَكْعَاتٍ صَلَاةِ الظُّهْرِ فَرَضَ اللَّهُ تَعَالَى مُتَوَجِّهًا إِلَى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने नमाज़ जुहर की चार रकअत फ़र्ज वास्ते अल्लाह तआला के रूख मेरा काअबा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर

## बाद जुहर

दो रकअत सुन्नत

نَوَيْتُ أَنْ أَصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى رَكْعَتَي صَلَاةِ الظُّهْرِ سُنَّةَ رَسُولِ اللَّهِ مُتَوَجِّهًا إِلَى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ जुहर की सुन्नत रसूले पाक की फ़र्ज के बाद वास्ते अल्लाह तआला के रूख मेरा काअबा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर

## जुहर की

दो रकअत नफ़ल

نَوَيْتُ أَنْ أَصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى رَكْعَتَي صَلَاةِ النَّفْلِ مُتَوَجِّهًا إِلَى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ जुहर की नफ़ल वास्ते अल्लाह तआला के रूख मेरा काअबा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर

## अस्र की चार रकअत सुन्नत

नीयत की मैंने चार रकअत नमाज़ अस्र की सुन्नत रसूले पाक



की वास्ते अल्लाह तआला के रूख मेरा काअबा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर

نَوَيْتُ أَنْ أَصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى أَرْبَعَ رَكَعَاتٍ صَلَاةَ الْعَصْرِ  
سُنَّةَ رَسُولِ اللَّهِ مُتَوَجِّهًا إِلَى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

**असर की**  
चार रकअत फर्ज

نَوَيْتُ أَنْ أَصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى أَرْبَعَ رَكَعَاتٍ صَلَاةَ الْعَصْرِ  
فَرْضَ اللَّهِ مُتَوَجِّهًا إِلَى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने चार रकअत नमाज़ असर की फर्ज वास्ते अल्लाह तआला के रूख मेरा काअबा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर

**मगरिब की**

तीन रकअत फर्ज

نَوَيْتُ أَنْ أَصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى ثَلَاثَ رَكَعَاتٍ صَلَاةَ الْمَغْرِبِ فَرْضَ  
اللَّهِ مُتَوَجِّهًا إِلَى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने तीन रकअत नमाज़ मगरिब की फर्ज वास्ते अल्लाह तआला के रूख मेरा काअबा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर

**मगरिब की**

दो रकअत सुन्नत

نَوَيْتُ أَنْ أَصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى رَكَعَتَيْنِ صَلَاةَ الْمَغْرِبِ سُنَّةَ  
رَسُولِ اللَّهِ مُتَوَجِّهًا إِلَى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ मगरिब की सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआला के रूख मेरा काअबा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर

**इशा की**

चार रकअत सुन्नत

نَوَيْتُ أَنْ أَصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى أَرْبَعَ رَكَعَاتٍ صَلَاةَ الْعِشَاءِ سُنَّةَ  
رَسُولِ اللَّهِ مُتَوَجِّهًا إِلَى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने चार रकअत नमाज़ इशा की सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआला के रूख मेरा काअबा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर

**नमाज़े इशा**

की चार रकअत फर्ज

نَوَيْتُ أَنْ أَصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى أَرْبَعَ رَكَعَاتٍ صَلَاةَ الْعِشَاءِ  
فَرْضَ اللَّهِ مُتَوَجِّهًا إِلَى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने चार रकअत नमाज़ इशा की फर्ज वास्ते अल्लाह तआला के रूख मेरा काअबा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर

**बाद इशा**

दो रकअत सुन्नत

نَوَيْتُ أَنْ أَصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى رَكَعَتَيْنِ صَلَاةَ الْعِشَاءِ سُنَّةَ  
رَسُولِ اللَّهِ مُتَوَجِّهًا إِلَى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ इशा की सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआला के रूख मेरा काअबा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर

**वित्र की**

तीन रकअत वाजिब

نَوَيْتُ أَنْ أَصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى ثَلَاثَ رَكَعَاتٍ صَلَاةَ الْوُثْرِ وَاجِبًا  
لِلَّهِ مُتَوَجِّهًا إِلَى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने तीन रकअत नमाज़ वित्र की वाजिब वास्ते अल्लाह तआला के रूख मेरा काअबा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर

**मस्जिद में दाखिल होने की दो रकअत सुन्नत-**

نَوَيْتُ أَنْ أَصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى رَكَعَتَيْنِ صَلَاةَ دُخُولِ الْمَسْجِدِ  
سُنَّةَ رَسُولِ اللَّهِ مُتَوَجِّهًا إِلَى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ मस्जिद में दाखिल होने की सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआला के रूख मेरा



काअबा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर

**जुम्आ से पहले की चार रकअत सुन्नत**

نَوَيْتُ أَنْ أَصِلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى أَرْبَعَ رَكَعَاتٍ صَلَوةً قَبْلَ الْجُمُعَةِ  
سُنَّةَ رَسُولِ اللَّهِ مُتَوَجِّهًا إِلَى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने चार रकअत नमाज़ जुम्आ की सुन्नत रसूले  
पाक की वास्ते अल्लाह तआला के रूख मेरा काअबा  
शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर

**जुम्आ की  
दो रकअत फर्ज**

نَوَيْتُ أَنْ أَصِلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى رَكَعَتَي صَلَوةِ الْجُمُعَةِ وَفَرْضِ اللَّهِ  
مُتَوَجِّهًا إِلَى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ जुम्आ की फर्ज वास्ते अल्लाह  
तआला के रूख मेरा काअबा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर

**बाद जुम्आ चार रकअत सुन्नत**

نَوَيْتُ أَنْ أَصِلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى أَرْبَعَ رَكَعَاتٍ صَلَوةً بَعْدَ الْجُمُعَةِ  
سُنَّةَ رَسُولِ اللَّهِ مُتَوَجِّهًا إِلَى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने बाद जुम्आ चार रकअत सुन्नत रसूले पाक की  
वास्ते अल्लाह तआला के रूख मेरा काअबा शरीफ की तरफ  
अल्लाहु अकबर

**जुम्आ की  
दो रकअत सुन्नत**

نَوَيْتُ أَنْ أَصِلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى رَكَعَتَي صَلَوةٍ بَعْدَ الْجُمُعَةِ  
سُنَّةَ رَسُولِ اللَّهِ مُتَوَجِّهًا إِلَى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ जुम्आ की सुन्नत रसूले पाक की वास्ते  
अल्लाह तआला के रूख मेरा काअबा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर

**दो रकअत  
नमाज़  
ईदुल फित्र**

نَوَيْتُ أَنْ أَصِلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى رَكَعَتَي صَلَوةِ عِيدِ الْفِطْرِ  
مَعَ سُنَّةِ تَكْبِيرَاتٍ زَائِدَةٍ وَاجِبًا لِلَّهِ تَعَالَى  
مُتَوَجِّهًا إِلَى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ ईदुल फित्र की वाजिब  
जाइद ६ तकबीरों के वास्ते अल्लाह तआला के रूख मेरा  
काअबा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर

**दो रकअत  
नमाज़  
ईदुल अजहा**

نَوَيْتُ أَنْ أَصِلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى رَكَعَتَي صَلَوةِ عِيدِ الْأَضْحَى  
مَعَ سُنَّةِ تَكْبِيرَاتٍ زَائِدَةٍ وَاجِبًا لِلَّهِ تَعَالَى  
مُتَوَجِّهًا إِلَى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ ईदुल अजहा की वाजिब  
जाइद ६ तकबीरों के वास्ते अल्लाह तआला के रूख मेरा  
काअबा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर

**दो रकअत  
नमाज़ तरावीह**

نَوَيْتُ أَنْ أَصِلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى رَكَعَتَي صَلَوةِ التَّرَاوِيحِ سُنَّةَ  
رَسُولِ اللَّهِ مُتَوَجِّهًا إِلَى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ तरावीह की सुन्नत रसूले  
पाक की वास्ते अल्लाह तआला के रूख मेरा काअबा  
शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर

**नोट**

(१) नमाज़े नफ़ल की नीयत ख़्वाह जुहर की हो या मगरिब या  
इशा की सबकी नीयत एक ही जैसी है।

(२) फर्जों की नीयत में **اَشْهَدُ بِهَذَا الْاَمْرِ** इक त दयतु बिहाजल इमाम  
(पीछे इस इमाम के) भी कहे जबकि जमाअत से पढ़ता हो।



# फज़ाइले नमाज़

ईमान व अक़ीदा सही कर लेने के बाद मुसलमानों पर सब फ़र्जों से अहम फ़र्ज और तमाम इबादतों में बड़ी इबादत नमाज़ है कुरआने पाक और अहदीसे तय्यिबा में सब से ज्यादा इसी की ताकीद आयी है और इसके छोड़ने पर सख्त अज़ाब और शदीद वर्इदें वारिद हुयी हैं। जैल में इस सिलसिले की चन्द हदीसें ज़िक्र की जाती हैं कि मुसलमान अपने आका प्यारे मुस्तफा रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इर्शादात सुनें, अमल करें और दूसरों को अमल की तरगीब दें अल्लाह तआला अमल की तौफीके रफ़ीक़ अता फरमाए। आमीन।

**(१) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इर्शाद फरमाते हैं कि इस्लाम की बुनियाद पांच चीजों पर है। १. इस अग्र की शहादत देना कि अल्लाह के सिवा कोसी सच्चा माअबूद नहीं और मुहम्मद ग़ुरतफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम उसके रसूल हैं। २. नमाज़ काएम रखना। ३. जकात देना। ४. हज़ करना। ५. और माहे रमज़ान के रोज़े रखना। (बुखारी शरीफ)**

**(२) हज़रते अबदुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्ह कहते हैं कि मैंने हुजुरे आअला सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से पूछा कि आग़ामाल में अल्लाह तआला के नज़्दीक सब से ज्यादा महबूब किया है? फरमाया! नमाज़ वक्त के अब्दर, मैंने अर्ज़ किया फिर किया? फरमाया वाल्दैन के साथ नैक सुलूक- अर्ज़ किया! फिर क्या? फरमाया! राहे खुदा में जिहाद। (बुखारी शरीफ)**

**(३) रहमतुलिल आलमीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया! बताओ तो किसी दरवाज़े पर नहर हो और वह उसमें हर रोज़ पाँच बार गुस्ल करे-व्या उसके बदन पर मेल रह जायेगा! सहाबा ने अर्ज़ किया! उसके बदन पर कुछ बाकी न रहेगा, फरमाया! यही मिसाल पाँचों नमाज़ों की है कि अल्लाह तआला उन की सब ख़ताओं को मिटा देता है। (बुखारी शरीफ)**

**(४)** नबीए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जाड़े में बाहर तशरीफ ले गये पतझड़ का ज़माना था दो टहनियाँ पकड़ लीं पत्ते गिरने लगे फरमाया! ऐ अबूज़र? अर्ज़ किया लब्बैक या रसूलुल्लाह! फरमाया मुसल्मान बन्दा अल्लाह तआला के लिये नमाज़ पढ़ता है तो उसके गुनाह ऐसे ही गिरते हैं जैसे इस दरख़्त से पत्ते। (अबू दाऊद बहवाला मिशकात सफ़हा ५८)

## गुज़ करने का सही तरीका

नीयत करने और बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम पढ़ने के बाद मिस्वाक इस्तेमाल की जाए। फिर गद्दों तक हाथों को पानी से मले और उंगलियों का खिलाल करे फिर बाएँ हाथ में लोटा वगैरह लेकर दाहिने हाथ पर उंगलियों की तरफ से शुरू करके गद्दे तक तीन बार पानी बहाया जाए फिर बाएँ हाथ पर उंगलियों की तरफ से शुरू करके गद्दे तक तीन बार पानी बहाए फिर तीन बार कुल्ली करे इस तरह कि मुँह की तमाम जड़ों और दाँतों की सब खिड़कियों में पानी पहुँच जाए कि वूजू में इस तरह कुल्ली करना सुन्नते मुअक्किदह है और गुस्ल में फ़र्ज है। अगर रोज़हदार न हो तो हर कुल्ली गरगरह के साथ करे फिर नाक में अगर रीठ लगी हो तो बाएँ हाथ से साफ करके सांस की मदद से तीन बार नर्म बाँसो तक पानी चढ़ाए ताकि कोयी बाल धुलने से बाक़ी न रहे फिर चेहरा पर अच्छी तरह पानी मल कर इसको तीन बार इस तरह धोए कि एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक पेशानी के ऊपर कुछ सर के हिस्से से ठोड़ी के नीचे तक हर हिस्सा पर पानी बह जाए अगर दाढ़ी हो तो इस तरह खिलाल करे कि उंगलियों को गरदन की तरफ से दाखिल करे और सामने निकाले और उसके बाल और खाल पर भी पानी बहाए फिर दोनों हाथों पर पानी मल कर पहले दाहिने हाथ पर फिर बायें हाथ पर सरे नाखुन से शुरू करके निस्फ बाजू तक तीन मरतबा पानी बहाए फिर सिर का मसह इस तरह करे कि दोनों हाथों के अँगूठे और कलमों की उंगलियाँ छोड़ कर बाक़ी तीन तीन उंगलियों के सरे मिलाकर पेशानी के बाल उगने की जगह



पर अगर बाल हों वरना इसकी खाल पर रखे और सर के उपरी हिस्से पर गद्दी तक इस तरह ले जाए कि हथेलियाँ सर से जुदा रहें फिर वहां से हथेलियों से सर के दोनों करवटों का मसह करते हुये पेशानी तक वापस लाए उसके बाद कलिमे की उंगलियों के पेट से कान के अन्दरुनी हिस्सा का मसह करे और अंगूठे के पेट से कान के बाहरी सतह का मसह करे और उन्ही उंगलियों की पुश्त से सिर्फ गरदन का मसह करे फिर पानी से दोनों पांव मले और बाँए हाथ की छंगुलिया से इस तरह खिलाल करे कि दाहिने पांव की छंगुलिया से शुरू करके अंगूठे पर खतम करे और बाँए पांव में अंगूठे से शुरू करके छंगुलिया पर खतम करे और दोनों पांव पर उंगलियों की तरफ से निस्फ पण्डली तक हर बाल और हर हिस्से खाल पर तीन तीन बार पानी बहाए। (मुकम्मल निजामे शरीअत)

## वुजू के फराइज़

वुजू में ४ फर्ज हैं:- (१) मुँह धोना पेशानी के बालों से ठुड़ी के नीचे तक और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक; (२) दोनों हाथों को कुहनियों समेत धोना; (३) चौथाई सर का मसह करना; (४) दोनों पांव टखनों समेत धोना। (रददुल मुहतार १ सफा १७)

## वुजू की सुन्नतें

(१) नीयत करना; (२) बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम पढ़ना; (३) पहले दोनों हाथ गद्दों तक धोना; (४) मिस्वाक करना; (५) तीन बार कुल्ली करना इस तरह कि पानी तमाम मुँह के अन्दर हलक की जड़ तक पहुँच जाए; (६) तीन मरतबा नाक की तमाम नर्म जगहों में पानी पहुंचाना; (७) मुँह धोते वक्त दाढ़ी का खिलाल करना; (८) हाथ पांव की उंगलियों का खिलाल करना; (९) हर अज़्व को तीन तीन बार धोना; (१०) एक बार पूरे सर का मसह करना; (११) दोनों कानों का मसह करना; (१२) तरतीब से वजू करना; (१३) अज़ा को पय दर पय (लगातार) धोना; (१४) दाढ़ी के जो बाल मुँह के दायरे से नीचे हैं उनका मसह करना; (आलमगीरी व बहारे शरीअत)

## वुजू के मुस्तहब्बात

(१) जो आअज़ा चौड़े हैं मसलन दोनों हाथ दोनों पांव तो इन में दाहिने से धोने की इत्दा (पहल) करें मगर दोनों रुखसार कि इन दोनों को एक ही साथ धोना चाहिये यँही दोनों कानों का मसह एक साथ होना चाहिये; (२) उँगलियों की पीठ से गरदन का मसह करना; (३) ऊँची जगह बैठकर वुजू करना; (४) वुजू का पानी पाक जगह गिराना; (५) अपने हाथ से वुजू का पानी भरना; (६) दूसरे वक्त के लिये पानी भर कर रख देना; (७) ढीली अंगूठी को भी फ़िरा लेना; (८) साहिबे उज़्र न हो तो वक्त से पहले वुजू कर लेना; (९) इतमिनान से वुजू करना; (१०) कानों के मसह के वक्त उँगलियाँ कानों के सुराखों में दाखिल करना; (११) कपड़ों को टपकते हुये कतरात से बचाना; (१२) वुजू का बरतन मिट्टी का होना; (१३) अगर तांबे वगैरह का हो तो क़लयी किया हुआ हो; (१४) अगर वुजू का बरतन लोटा हो तो बाँए तरफ रखना; (१५) हर अज़्व को धोकर उसपर हाथ फेरना ताकि क़तरे बदन पर या कपड़े पर न टपकें; (१६) हर अज़्व को धोते वक्त दिल में वुजू की नीयत का हाजिर रहना; (१७) हर अज़्व को धोते वक्त अलग अलग अज़्व के धोने की दुआओं को पढ़ते रहना; (१८) आज्ञाए वुजू को बिला ज़रूरत पोंछ कर खुश्क न करे और अगर पोछे तो कुछ नमी बाकी रहने दे; (१९) वुजू करके हाथ न झटके कि यह शैतान का पंखा है; (२०) वुजू के बाद अगर मकरूह वक्त न हो तो दो रकअत नमाज़ पढ़ ले इसको तहियतुल्वुजू कहते हैं।

## वुजू के मकरूहात

(१) वुजू के लिए नापाक जगह बैठना या नापाक जगह वुजू का पानी गिराना; (२) आज्ञाए वुजू से लोटे वगैरह में पानी टपकाना; (३) मस्जिद के अन्दर वुजू करना; (४) पानी में थूकना, नाक सिनिकना अगर चि दरिया या हीज़ हो; (५) किब्ला की तरफ थूकना या कुल्ली करना; (६) बे ज़रूरत दुनिया की बातें करना; (७) ज़रूरत से ज़्यादा पानी खर्च करना; (८) इतना कम पानी खर्च करना कि सुन्नत अंदा न



हो; (१) चेहरा पर ज़ोर से पानी मारना; (१०) एक हाथ से मुँह धोना कि यह हिन्दुओं (काफ़िरों) का तरीका है; (११) गले का मसह करना। (१२) बाएँ हाथ से कुल्ली करना या नाक में पानी डालना; (१३) दाएँ हाथ से नाक साफ़ करना; (१४) धूप के गर्म पानी से वुजू करना कि वह बर्स (सफेद दाग़) पैदा करता है; (१५) होंठ या आँख ज़ोर से बन्द कर लेना; (१६) किसी सुन्नत को छोड़ देना। (बहारे शरीअत)

## वुजू को तोड़नेवाली चीज़ें

पाखाना, पेशाब, वदी, मजी, मनी, कीड़ा, पथरी, जो मर्द या औरत के आगे या पीछे के मक़ाम से निकले। ● मर्द या औरत के पीछे के मक़ाम से हवा का निकलना; ● खून या पीप या पीले पानी का बदन के किसी भी हिस्सा से निकलना और बहना, खाने या पानी या सुफ़ा की मुँह भर क़य आना; ● इस तरह सो जाना कि दोनों सुरीन अपनी जगह अच्छी तरह न जमें हों; ● चित या पट या करवट पर लेट कर सो जाना; ● बेहोशी, जुनून, ग़शी और इतना नशा कि चलने में पाँव लड़खड़ाए इससे भी वुजू टूट जाता है; ● बालिग़ शख्स का रुकूअ व सुजूद वाली नमाज़ में इतनी आवाज़ से हँसना कि आसपास वाले सुन लें; ● दाँतों से इस क़दर खून निकलना कि इससे थूक का रंग सुर्ख (लाल) हो गया; ● दुखती हुयी आँख से पानी बहना क्योंकि वह पानी (आँसू) नापाक है, इस तरह कान, नाक, पिस्तान वगैरह में दाना या नासूर या कोयी मर्ज़ हो उनकी वजह से जो पानी बहे इससे भी वुजू जाता रहता है;

**मसअलह:** औरत के आगे के मक़ाम से जो खालिस रतूबत बिगैर खून वाली निकलती है इससे वुजू नहीं टूटता अगर यह रतूबत कपड़े में लग जाए तो कपड़ा पाक है;

**मसअलह:** आँख में दाना था और वह फूट कर आँख के अन्दर ही फैल गया बाहर नहीं निकला या कान के अन्दर दाना टूटा और उसका पानी सुराख से बाहर नहीं निकला तो इन सूतों में वुजू बाकी है;

**मसअलह:** बलग़म की क़य से वुजू नहीं टूटता जितनी भी हो।

## वुजू के बाद की दुआ

वुजू के दरमियान दुरुद शरीफ़ पढ़ना मुस्तहब है और वुजू करके यह दुआ पढ़े। **اللّٰهُمَّ اجْعَلْنِي مِنَ التَّوَّابِينَ وَاجْعَلْنِي مِنَ الْمُتَطَهِّرِينَ**

**अल्लाहुम्मज्जअल्ली गिनतौवाबीन वज्जअल्ली गिनल मुततहहिरीन** ★ और कलिमए शहादत भी पढ़े।

## गुस्ल का बयान

गुस्ल कहते हैं नहाने को मगर शरीअत में नहाने का एक खास तरीका है और वह इस तरह है कि पहले इस्तिन्जा करे फिर उसके बाद जो निजासत बदन पर लगी हो उसे धो डाले फिर वुजू करे इसके बाद सारे बदन पर तीन मरतबा पानी बहाए।

## गुस्ल के फ़राइज़ तीन हैं

(१) कुल्ली करना; (२) नाक में पानी डालना; (३) सारे बदन पर पानी बहाना।

(१) गुस्ल की नीयत करना; (२) दोनों हाथों को पहले गद्दों तक तीन बार धोना; (३) बिस्मिल्लाह पढ़ना; (४) शर्मगाह को गुस्ल से पहले धोना उस पर निजासत हो या न हो; (५) वुजू करना; (६) तीन मरतबा सर और तमाम बदन पर पानी बहाना; (७) किल्ला की तरफ़ मुँह न करना; (८) तमाम बदन पर पानी मल लेना ताकि हर जगह पानी अच्छी तरह पहुँच जाए; (९) ऐसी जगह नहाना जहाँ कोई न देखे; (१०) पानी में कमी या ज़्यादाती न करना; (११) औरतों को बैठ कर नहाना; (१२) नहाते वक़्त कोई बात न करना; (१३) कोई दुआ न पढ़ना;

## गुस्ल का तरीका

पहले दोनों हाथ गद्दे तक धोए उसके बाद फिर जहाँ निजासत लगी हो धोए फिर इस्तिन्जा की जगह धोए और बिस्मिल्लाह पढ़ कर वुजू करे, कुल्ली के साथ गरारह भी करे लेकिन अगर रोज़े से हो तो गरारह न करे सिर्फ़ कुल्ली करे नाक में नरम वांसे तक पानी ले जाये, फिर वुजू के बाद तमाम बदन पर थोड़ा पानी डाल कर तेल की तरह चुपड़ ले और



पहले दाहिने मूढ़े पर फिर बाएँ मूढ़े पर तीन बार पानी बहाए इसके बाद तमाम बदन पर तीन बार पानी बहाए और बदन खूब मले ताकि कोयी जगह पानी पहुँचने से बाकी न रह जाए। खुली हुयी जगह पर नंगा न नहाए मर्द को नाफ से घुटने तक और औरत को गले से टखने तक छुपाना फर्ज है और गुस्लखाने वगैरह में हो और जरूरत हो तो न छुपाने में कोई हरज नहीं औरत के बाल अगर गुंधे हों लेकिन जड़ों तक पानी पहुँच सकता है तो खलौने की जरूरत नहीं वरना खोलना जरूरी है अगर जेवर वगैरह पहनी हो तो उसको फिरा कर सुराख में पानी को बहाए अगर मर्द के बाल औरत की तरह लम्बे हों और वह चोटी या जूड़ा बाँधे हो तो बालों को खोल कर जड़ों तक पानी पहुँचाना जरूरी है वगैर इसके गुस्ल सही नहीं होगा।

(गुलज़ारे शरीअत)

## तयम्मूम का बयान

वुजू और गुस्ल के लिए जब पानी न मिल सके या पानी नुकसान करें तो पाक मिट्टी पर पंजों समीत हथेली मार कर चेहरा और तमाम हाथों पर फेर लेना तयम्मूम कहलाता है।

## तयम्मूम का तरीका

तयम्मूम में नीयत फर्ज है यानी नीयत करे कि नापाकी दूर करने के लिए या नमाज़ पढ़ने के लिए तयम्मूम करता हूँ :- नीयत के बाद दोनों हाथों को पाक मिट्टी पर मारे फिर हाथ झाड़कर तमाम मुँह पर मले और जितना हिस्सा मुँह का वुजू में धोया जाता है उतने हिस्सा पर हाथ पहुँचाए फिर दुबारा मिट्टी पर हाथ मार कर हाथों को कुहनियों तक मले और उँगलियों का खिलाल भी करे वुजू और गुस्ल के तयम्मूम में कोई फर्क नहीं है और जितनी पाकी वुजू और गुस्ल से होती है उतनी है तयम्मूम से भी होती है।

## अज़ान व अक़ामत

फर्ज नमाज़ों से पहले अज़ान देना सुन्नते मुअक्किदह है और शुआरे इस्लाम में दाखिल है जो शख्स अज़ान दे उसे चाहिए कि ऊँची जगह क़िब्ला की तरफ़ रूख करके खड़ा हो और कलिमा

की दोनों उँगलियों को कानों के दोनों सुराखों में डाल कर बुलन्द आवाज़ से अज़ान कहे अज़ान के बाद जमाअत से पहले अक़ामत (तकबीर) कही जाती है अक़ामत बिल्कुल अज़ान की तरह है सिर्फ़ चन्द बातों का फर्क है : (१) अक़ामत में हय्य अलस्सलात और हय्य अलल फलाह के बाद क़द का मतिस्सलात दो बार कहे (२) अक़ामत अज़ान के मुकाबिले में जरा पस्त आवाज़ से कहे (३) अक़ामत कहते वक्त कानों के सुराखों में उँगलियाँ डालने की जरूरत नहीं (४) अक़ामत मस्जिद के अन्दर कहे :-

**तम्बीह :** (१) अक़ामत में हय्य अलस्सलात और हय्य अलल फलाह कहते वक्त दाहिने बाएँ मुँह न करे (२) इमाम और मुक्तदी हय्य अलस्सलात या हय्य अलल फ़लाह के वक्त खड़े हों :-

## अज़ान का तरीका

मस्जिद के बाहरी हिस्से में किसी ऊँची जगह पर क़िब्ला की तरफ़ मुँह करके खड़ा हो और कानों के सुराखों में कलिमा की उँगलियाँ डाल कर बुलन्द आवाज़ से **अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर** **الله أكبر الله أكبر** कहे फिर जरा ठहर कर **अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर** **الله أكبر الله أكبر** कहे फिर जरा ठहर कर दो बार **अशहदु अल्ला इला ह इल्ला अल्ला** **أشهد أن لا إله إلا الله** कहे फिर जरा ठहर कर दो बार **अशहदु अन्-न मुहम्मदर रसूलुल्लाह** **أشهد أن محمداً رسول الله** कहे फिर दाहिनी तरफ़ मुँह फेर कर दो बार **हय्य अलस् सलात** **حي على الصلاة** कहे फिर बाँयी तरफ़ मुँह करके दो बार **हय्य अलल फलाह** **حي على الفلاح** कहे फिर क़िब्ला की तरफ़ मुँह करे और एक बार **अल्लाहु अकबर** **الله أكبر الله أكبر** कहे फिर एक बार **ला इला ह इल्ला अल्ला** **لا إله إلا الله** कहे।

फज़्र की अज़ान में **हय्य अलल फलाह** के बाद दो बार **अस्लातु खैरुम् मिनन् नौम** भी कहे। अज़ान के बाद



दुरुद शरीफ पढ़े फिर अज्ञान कहने वाला और अज्ञान सुनने वाले सभी यह दुआ पढ़ें।

अल्लाहुम्म सल्ले अला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व आलेही वसल्लिम। अल्लाहुम्म रब्ब हाजिहिद दअवतिताम्मति वरसलातिल काए मति आवि सय्यिदिना मुहम्मदनिब वसी ल व वल् फदील व वद द र जतरफी अ त वब अरहु मकामम महमू दनिब लजी व अतह वरज्जना शफा अ तह यौमल किया मति इन्न कला तुखिलफुल मीआद

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّآلِهِ وَسَلِّمَ اَللّٰهُمَّ رَبِّ هَذِهِ الدُّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلَاةِ الْقَائِمَةِ اَنْتَ مُحَمَّدٌ اِلٰى وَسِيْلَةٍ وَالْقُضِيَّةِ وَالْدَّرَجَةِ الرَّبِّيَّةِ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُودًا اِلٰى الَّذِي وَعَدْتَهُ وَاَرْسُلْهُ شَفَاعَتَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْوَعْدَ

## नमाज़ के फराइज़

नमाज़ में १२ फर्ज हैं जिनमें से चन्द ऐसे हैं जिन का नमाज़ से पहले होना ज़रूरी है और उनको नमाज़ के खार्जी फराइज़ और शराइते नमाज़ भी कहा जाता है और चन्द फराइज़ वह हैं जो दाखिले नमाज़ हैं सबकी फिहरिस्त यह है :-

### शराइते नमाज़

(१) तिहारत यानी बदन और कपड़ों का पाक होना (२) सतर औरत यानी मर्दों को नाफ से घुटनों तक और औरतों को चहरे और हथेलियों और कदमों के अलावा तमाम बदन का ढाँकना फर्ज है (३) नमाज़ का वक्त होना (४) किब्ला की तरफ रुख होना (५) नमाज़ की नीयत करना :-

### फराइज़े नमाज़

(१) तकबीरे तहरीमा (२) क़याम यानी खड़ा होना (३) किरअत

यानी एक बड़ी आयत या तीन छोटी आयतें या एक छोटी सूरात पढ़ना (४) रुकूअ करना (५) सिज्दा करना (६) काअदए अखिरह (७) अपने इरादे से नमाज़ खत्म करना :-

अगर इनमें से कोई चीज़ भी जानकर या भूल कर रह जाए तो सिज्दए सहव करने से भी नमाज़ न होगी बल्कि दुबारा पढ़ना ज़रूरी होगा :-

## वाजिबाते नमाज़

जैल की चीजे नमाज़ में वाजिब हैं :-

● तहरीमा में लफ्जे अकबर कहना; ● अलहमद पढ़ना और इसके साथ कोई सूरात मिलाना; ● फर्ज की पहली दो रकअतों में किरअत करना; ● अलहमद को सूरात से पहले पढ़ना; ● रुकूअ करके सीधा खड़ा होना; ● दोनों सिज्दों के दरमियान बैठना; ● पहला काअदह करना; ● पहले काअदह में अत्तहियात के बाद कुछ न पढ़ना; ● हर काअदह में अत्तहियात का पढ़ना; ● लफ्जे अस्सलाम आखिर में २ बार कहना ● जुहर व अस् में किरअत आहिस्ता आहिस्ता पढ़ना; ● इमाम के लिये मगरिब व इशा की पहली दो रकअतों और फ़ज़्र व जुम्आ व इदैन और तरावीह की सब रकअतों में बुलन्द आवाज़ से किरअत करना; ● वित्र में दुआए कुनूत का पढ़ना; ● इदैन में ६ तकबीरें ज़्यादा कहना;

वाजिबात में से अगर कोई वाजिब भूल कर छूट जाए तो सिज्दए सहव से नमाज़ हो जायेगी अगर कसदन किसी वाजिब को छोड़ दिया तो दुबारा नमाज़ पढ़ना वाजिब है सिज्दए सहव से भी काम न चलेगा।

## नमाज़ की सुन्नते

● तकबीरे तहरीमा के लिए हाथ उठाना; ● हाथों की उँगलियाँ अपने हाल पर रखना; ● तकबीर के बाद फौरन हाथ बाँध लेना; ● पहले सुन्नात क फिर अऊ जु बिल्लाह और बिस्मिल्लाह पढ़ना; ● अलहमद के खतम पर आमीन आहिस्ता से कहना; ● रुकूअ में घुटनों पर हाथ रखना और उँगलियाँ न फैलाना; ● रुकूअ में कम से कम



तीन बार **सुब्हा न रब्बियल अज़ीम** कहना; ● रुकूअ में जाने के लिए **अल्लाहु अकबर** कहना; ● रुकूअ में सिर्फ़ इस कदर झुकना कि हाथ घुटनों तक पहुँच जाए; ● रुकूअ से उठते वक्त **समिअल्लाहु लिमन हमिदह** कहना सज्दे के लिए और सज्दे से उठने के लिए **अल्लाहु अकबर** कहना; ● सज्दे में हाथ ज़मीन पर रखना; ● कम से कम तीन बार **सुब्हा न रब्बियल आला** कहना; ● सज्दे में जाने के लिए ज़मीन पर पहले दोनों घुटने एक साथ रखना फिर हाथ, फिर नाक, फिर पेशानी और सज्दे से उठते वक्त इसके उल्टा करे यानी पहले पेशानी उठाए फिर नाक फिर हाथ फिर घुटने; ● दोनों सज्दों के दरमियान मिसले तशहहूद के बैठना; ● दूसरी रकअत के लिए पंजों के बल घुटनों पर हाथ रख कर उठना; दूसरी रकअत के सज्दों से फारिग होकर बायाँ पाँव बिछा कर दाहिना खड़ा करके बैठना और औरत के लिए दोनों पाँव दाहिनी जानिव निकाल कर बाँए सुरीन पर बैठना; ● दाहिना हाथ दाहिनी रान पर रखना और बायाँ बायीं पर; ● उँगलियों को अपने हाल पर छोड़ना और उनके किनारे घुटनों के पास होना; ● शहादत पर इशारा करना; ● तशहहूद के बाद काअदए अखीरह में दुरुद शरीफ़ पढ़ना; ● दुरुद शरीफ़ के बाद अर्वी में दुआ करना और बेहतर वह दुआएँ हैं जो हदीसों से मकूल हैं; ● **अरसलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह** दो बार कहना पहले दाहिनी तरफ़ फिर बायीं तरफ़; ● ज़हर, मगरिब और इशा के बाद मुखसर दुआ करके सुन्नतों के लिये खड़ा हो जाना वरना सुन्नतों का सवाब कम हो जाएगा; (दुर्गे मुख्तार, आलमगीरी वगैरह)

## नमाज़ के मुस्तहब्बात

● क़याम की हालत में सज्दा की जगह नज़र रखना; ● रुकूअ में पाँव की पीठ की तरफ़, सज्दह में नाक की तरफ़ और काअदह में ग़ोद की तरफ़ नज़र रखना- ● पहले सलाम में दाहिने शाने की तरफ़ दुसरे में बाँए तरफ़ नज़र रखना; ● जमायी आए तो मुँह बन्द किये रहना अगर न रुके तो होंट दाँत के नीचे दबाए और इससे भी न रुके तो क़याम में दाहिने हाथ की पुशत

से मुँह ढाँक ले और क़याम में न हो तो बाँए हाथ की पुशत से और बिला ज़रूरत हाथ या कपड़े से मुँह ढाँकना मकरुह है; ● तहरीमा के वक्त हाथ कपड़े से बाहर निकालना, औरत के लिये तक्वीर तहरीमा के वक्त हाथ कपड़े के अन्दर रखना; ● जहाँ तक बन पड़े खाँसी को रोकना; ● क़याम की हालत में दोनों पंजों के दरमियान चार अंगुल का फास्ला होना;

## मकरुहाते नमाज़

यह चीज़ें नमाज़ में मकरुह है :-

● कोख पर हाथ रखना; ● आस्तीन से बाहर हाथ निकाले रखना; ● कपड़े समेटना; ● जिस्म के कपड़े से खेलना; ● उगलियाँ चटखाना; ● दाँए बाँए गरदन मोड़ना; ● मर्द को जूड़ा गूँध कर नमाज़ पढ़ना; ● अंगड़ाई लेना; ● कुत्ते की तरह बैठना; ● मर्द को सज्दे में हाथ ज़मीन पर बिछाना; ● सज्दे में मर्दों के लिये पेट रानों से मिलाना; ● बिगैर उज़्र के चार जानू (आल्ती पाल्ती) बैठना; ● इमाम का मेहराब के अन्दर खड़ा होना; ● कंकरियाँ हटाना मगर जबकि ज़रूरी हो तो एक बार जाइज़ है; ● सामने या सर पर तस्वीर होना; ● तस्वीर वाले कपड़े में नमाज़ पढ़ना; ● कन्धें पर चादर या कोई कपड़ा लटकाना; ● पेशाब, पाखाना या ज़्यादा भूक का तकाज़ा होते हुये नमाज़ पढ़ना; ● सर खोल कर नमाज़ में खड़ा होना; ● आखे बन्द करके नमाज़ पढ़ना; ● उँगलियाँ चटखाना या कैची बाँधना; ● कमर पर हाथ रखना; ● धात या चैन वाली घड़ी पहन कर नमाज़ पढ़ना; ● फासिके मोअलिन के पीछे नमाज़ पढ़ना मस्लन जो बिला उज़्र जमाअत या नमाज़ तर्क करता हो उसके पीछे नमाज़ मकरुह है;

## मुफ़िस्दाते नमाज़

इन चीज़ों के करने से नमाज़ फासिद हो जाती है :-

● बात करना खाह थोड़ी हो या बहुत कस्दन या भूल कर; ● जबान से सलाम करना या सलाम का जवाब देना; ● छींकने वाले के जवाब में थर ह मुकल्लाह कहना; ● रंज की खबर सुन कर इन्ना



लिल्लाहि व इन्ना एलैहि राजिऊन पूरा या थोड़ा सा पढ़ना या अच्छी खबर सुन कर **अलहम्दु लिल्लाह** कहना या अजीब चीज सुनकर **सुबहानल्लाह** कहना; ● दुःख तकलीफ की वजह से आह, ओह या उफ़ करना; ● अपने इमाम के सिवा किसी दुसरे को लकमा देना; ● कुरआन शरीफ देख कर पढ़ना; ● किरअत में ऐसी गलती करना जिससे नमाज़ फासिद हो जाती है (जिसकी तफ्सील बड़ी किताबों में लिखी है) ● अमले कसीर मस्लन ऐसा काम करना जिसे देखने वाला गुमान करे कि यह शख्स नमाज़ नहीं पढ़ रहा है मस्लन दोनों हाथों से काम करना; ● कस्दन या भूल कर कुछ खाना पीना; ● सीना किल्ला से फिर जाना; ● दर्द या मुसीबत की वजह से इस तरह रोना कि आवाज़ में हुरूप निकल जाए; ● नमाज़ में हँसना; ● इमाम से आगे बढ़ जाना; (तिरमीज़ी)

## जमाअत व इमामत का बयान

जमाअत की बड़ी ताकीद आई है और इसका सवाब बहुत ज़्यादा है यहाँ तक कि बे जमाअत की नमाज़ से जमाअत वाली नमाज़ का सवाब २७ गुना है।

(मिशक़त जिल्द १ सफ़हा ९५)

**मसअलह:** मर्दों को जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना वाजिब है बिला उज्र एक बार भी जमाअत छोड़ने वाला गुनहगार और सज़ा के लाइक है और जमाअत छोड़ने की आदत डालने वाला फासिक है जिसकी गवाही कुबूल नहीं की जायेगी;

(रूददुल मुहतार)

**मसअलह:** जुम्आ व इदैन में जमाअत शर्त है यानी बगैर जमाअत यह नमाज़ें होंगी ही नहीं, तरावीह में जमाअत सुन्नत किफाय्या है यानी मुहल्ला के कुछ लोगों ने जमाअत से पढ़ी तो सबके जिम्मा से जमाअत छोड़ने की बुराई जाती रही और अगर सब ने जमाअत छोड़ दी तो सबने बुरा किया रमज़ान शरीफ में वित्र को जमाअत से पढ़ना मुस्तहब है इसके अलावा सुन्नतों और नफलों में जमाअत मकरूह है;

(रूददुल मुहतार जिल्द १ सफ़हा ३७१)

**मसअलह:** अकेला मुक्तदी मर्द अगरचे लड़का हो इमाम के

बराबर दाहिनी तरफ खड़ा हो बाँए तरफ या पीछे खड़ा होना मकरूह है दो मुक्तदी हों तो पीछे खड़े हों इमाम के बराबर खड़ा होना मकरूह तन्ज़ीही है दो से ज़्यादा का इमाम के बगल में खड़ा होना मकरूह तहरीमी है।

(दुर्मुख्तार जिल्द १ सफ़हा ३९१)

**मसअलह:** पहली सफ में और इमाम के करीब खड़ा होना अफ़जल है लेकिन जनाज़ा में पिछली सफ अफ़जल है; (दुर्मुख्तार सफ़हा ३८३)

**मसअलह:** इमाम होने का सबसे ज़्यादा हक़दार वह शख्स है जो नमाज़ व तिहारत वगैरह के अहकाम सबसे ज़्यादा जानता हो फिर वह शख्स जो किरअत का इल्म ज़्यादा रखता हो अगर कई शख्स इन बातों में बराबर हों तो वह शख्स ज़्यादा हक़दार है जो ज़्यादा मुत्तकी हो अगर इस में भी बराबर हों तो ज़्यादा उम्र वाला फिर जिसके अख़्लाक ज़्यादा अच्छे हों फिर ज़्यादा तहज़ुद गुज़ार गर्ज कि चन्द आदमी बराबर दर्जे के हों तो उनमें जो शरीही हैसियत से फ़ौकियत रखता हो वही ज़्यादा हक़दार है;

**मसअलह:** फासिके मोअलिन जैसे शराबी, जिनाकार-जुवाड़ी, सुदखोर, दाढ़ी मुड़ाने वाला या कटाकर एक मुश्त से कम रखने वाला इन लोगों को इमाम बनाना गुनाह है और इन लोगों के पीछे नमाज़ मकरूह तहरीमी है और नमाज़ को दुहराना वाजिब है;

**मसअलह:** कादियानी, राफ़ज़ी, खार्जी, वहाबी और दूसरे तमाम बद मज़हबों के पीछे नमाज़ पढ़ना नाजाइज व गुनाह है अगर ग़लती से पढ़ली तो फिर से पढ़े अगर दुबारा नहीं पढ़ेगा तो गुनहगार होगा;

## किरअत का बयान

किरअत यानी कुरआन शरीफ पढ़ने में इतनी आवाज़ होनी चाहिए कि अगर बहरा न हो और शोर व गुल न हो तो खुद अपनी आवाज़ सुन सके अगर इतनी आवाज़ भी न हुई तो किरअत नहीं हुई और नमाज़ न होगी।

(दुर्मुख्तार जिल्द १ सफ़हा ३५९)

**मसअलह:** फज़्र में और मगरिव व ईशा की पहली दो रकअतों में और जुम्आ व इदैन व तरावीह और रमज़ान की वित्र में इमाम पर जहर के साथ किरअत करना वाजिब है और मगरिव की



तीसरी रकअत में और इशा की तीसरी और चौथी रकअत में और जुहर व अस्त्र की सब रकअतों में आहिस्ता पढ़ना वाजिब है :

**मसअलह :** जहरी नमाजों में अकेले को इस्तिथार है चाहे जोर से पढ़े चाहे आहिस्ता मगर जोर से पढ़ना अफजल है : (दुर्रु मुख्तार सफ्हा ३५८)

**मसअलह :** कुरआन शरीफ उलटा पढ़ना मकरूहे तहरीमी है मसलन यह कि पहली रकअत में कुल हु वल्लाह और दूसरी में तब्बत यदा पढ़ना : (दुर्रु मुख्तार सफ्हा ३६८)

**मसअलह :** दरमियान से एक छोटी सूरह छोड़कर पढ़ना मकरूह है जैसे पहली में कुल हु वल्लाह और दूसरी में कुल अऊ जु बिराबिन्नास पढ़ी और दरमियान में सिर्फ एक सूरह कुल अऊ जु बिरबिल फलक छोड़ दी लेकिन हाँ अगर दरमियान की सूरह पहले से बड़ी हो तो दरमियान में एक सूरह छोड़कर पढ़ सकता है।

### सज्दए सहव

जो चीजें नमाज़ में वाजिब हैं अगर उनमें से कोई वाजिब भूल से छूट जाए तो उसकी कमी पूरी करने के लिये सज्दए सहव वाजिब है और इसका तरीका यह है कि नमाज़ के आखिर में अत्तिहयात पढ़ने के बाद दाहिनी तरफ सलाम फेरने के बाद दो सज्दा करे और फिर अत्तिहयात और दुरुद शरीफ और दआ पढ़ कर दोनों तरफ सलाम फेर दे :-

अगर कसदन किसी वाजिब को छोड़ दिया तो सज्दए सहव काफी नहीं बल्कि नमाज़ को दुहराना वाजिब है : (दुर्रु मुख्तार)

**मसअलह :** एक नमाज़ में अगर भूल से कई वाजिब छूट गए तो एक बार वही दो सज्दए सहव के सबके लिए काफी हैं चन्द बार सज्दए सहव की जरूरत नहीं। (दुर्रु मुख्तार सफ्हा ४९७)

**मसअलह :** पहले कअदह में अत्तिहयात पढ़ने के बाद तीसरी रकअत के लिये खड़े होने में इतनी देर लगा दी कि अल्लाहुम्म सल्ले अला मुहम्मदिन पढ़ सके तो सज्दए सहव वाजिब है चाहे कुछ पढ़े या खामोश रहे दोनों सूरतों में सज्दए सहव वाजिब है

इसिलिये ध्यान रखे कि पहले कअदह में अत्तिहयात खत्म होते ही फौरन तीसरी रकअत के लिए खड़ा हो जाए।

### नमाज़ पढ़ने का सही तरीका

नमाज़ पढ़ने का तरीका यह है कि बा वजू किब्लारु दोनों पांव के पंजों में चार अंगुल का फासिला कैरके खड़ा हो और दोनों हाथ कान तक ले जाए कि अंगूठे कान की लौ से छू जाएँ इस हाल में कि हथेलियाँ किब्लारुख हों फिर नीयत करके अल्लाहु अकबर **الله أكبر** कहता हुआ हाथ नीचे लाकर नाफ के नीचे बांध ले और सना पढ़े।

**सुब्हानका अल्लाहुम्म व वि हुम् दिक् व तबारकस्मुक व तक्षाला नहुक व लाइलाह गैरुक**

**سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَيَحْمَدُكَ وَيُتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ**

इसके बाद **अऊजुबिल्लाहि गिनशशैतानिरजीम** फिर **बिरिमिल्लाहि**

**रहमानिरहीम** **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** पढ़कर अलहम्द शरीफ (सूरह फ़ातिहा) पढ़े जब सुरए फ़ातिहा खत्म हो जाये तो आहिस्ता से आमीन कहें फिर इसके बाद **बिरिमिल्लाहिर रहमानिरहीम** पढ़ कर कोयी सूरह या कुरआन मजीद की कम से कम एक बड़ी या तीन छोटी आयतें पढ़ें।

अब **अल्लाहु अकबर** कहता हुआ रुकूअ में जाए और घूटनों को हाथ से पकड़ ले इस तरह कि हथेलियाँ घूटने पर हों उँगलियाँ खूब फैली हों पीठ बिछी हो और सर पीठ के बराबर हो ऊँचा नीचा न हो और कम से कम तीन बार **सुब्हान रब्बियल अज़ीम**



**سُبْحَنَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ** कहे फिर **समीअल्लाहुलिमन हमीदह**  
**سُبْحَنَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ** कहता हुआ सीधा खड़ा हो जाए और अकेले  
 नमाज़ पढ़ता हो तो इसके बाद **रब्बनालकलहम्द** **رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ**  
 कहे फिर **अल्लाहुअकबर** कहता हुआ सज्दा में जाए इस तरह कि  
 पहले घुटने ज़मीन पर रखे फिर हाथ फिर दोनों हाथों के बीच में नाक  
 फिर पेशानी रखे इस तरह कि पेशानी और नाक की हड्डी ज़मीन पर जम  
 जाए और बाजूओं को करवटों और पेट को रानों और रानों को पिन्डलियों  
 से जुदा (अलग) रखे और दोनों पांव की सब उगलियों के पेट किल्लारु  
 जमे हों और हथेलियाँ बिछी हों और उगलियाँ किल्ला को हों और कम से  
 कम तीन बार **सुब्हानरब्बिल आत्ता** **سُبْحَنَ رَبِّيَ الْأَعْلَى**  
 कहे फिर सर उठाए फिर हाथ और दाहिना कदम खड़ा करके इसकी  
 उगलियाँ किल्ला रुख करे और बायाँ कदम बिछा कर उसपर खूब सीधा  
 बैठ जाए और हथेलियाँ बिछा कर रानों पर घुटनों के पास रखे फिर  
 अल्लाहु अकबर कहता हुआ सज्दा में जाए और पहले की तरह सज्दा  
 करके फिर सर उठाए फिर हाथ को घुटनों पर रखकर पंजों के बल  
 खड़ा हो जाए अब सिर्फ **बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम**  
 पढ़कर किरात शुरु करे फिर पहले की तरह रुकुअ, सज्दा करके  
 बायाँ कदम बिछा कर बैठ जाए और तशहहुद पढ़े

**अतहिस्सातु लिल्लाहि वरसलवा तु वतैस्सिबातु ०**  
**अरसलामु अलैक अब्युहन्नबीयु व रहमतुल्लाहि व**  
**बरकातुहु अरसलामु अलैना व अला इबा**  
**दिल्लाहिरसालिहीन ० अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु**  
**व अशहदु अन्-न मुहम्मदन् अब्दुहु व रसूलुहु**

**الشَّحَادَاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَاةِ وَالطَّيِّبَاتُ السَّلَامُ عَلَيْكَ**  
**أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ أَسْلَمَ عَلَيْكَ وَأُ**  
**عَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا**  
**اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ**

तशहहुद पढ़ते हुये जब कलिमा **ला** के करीब पहुँचे तो दाहिने हाथ की बीच  
 की उगली और अंगूठे का हल्का बनाए और छंगलिया और उसके पास  
 वाली को हथेली से मिला दे और लफ्जे **ला** पर कलिमा की उगली उठाए  
 मगर इधर उधर न हिलाये और कलिमा **इल्ला** पर गिरा दे और सब  
 उगलियाँ फोरन सीधी कर ले अब अगर दो से ज्यादा रकअतें पढ़नी हैं तो  
 उठ खड़ा हो और उसी तरह पढ़े मगर फर्जों की उन रकअतों में **अलहम्दु**  
 के साथ **सूरह** मिलाना जुरुरी नहीं अब पिछला काअदह जिसके बाद  
 नमाज़ खतम करेंगे उसमें तशहहुद के बाद **दुरुद शरीफ** पढ़े-

**अल्लाहुम्मा सल्ले अला सैय्यिदिना मुहम्मदि व अला**  
**आले सैय्यिदिना मुहम्मदिन् कमा सल्लै व अला**  
**सैय्यिदिना इब्राही म व अला आले सैय्यिदिना इब्राही म**  
**इन्नक हमीदुन् मजीद ० अल्लाहुम्मा बारिक अला**  
**सैय्यिदिना मुहम्मदिव व अला आले सैय्यिदिना**  
**मुहम्मदिन् कमा बारिक व अला सैय्यिदिना इब्राही म व**  
**अला आले सैय्यिदिना इब्राही म इन्नक हमीदुम् मजीद**

**اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ**  
**كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى سَيِّدِنَا إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ سَيِّدِنَا إِبْرَاهِيمَ**  
**إِنَّكَ حَمِيدٌ مُجِيدٌ اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى**  
**آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى سَيِّدِنَا إِبْرَاهِيمَ وَ**  
**عَلَى آلِ سَيِّدِنَا إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مُجِيدٌ**  
 फिर दुआए मासूरह पढ़े:

**अल्लाहुम्मा इब्नी ज़लमतु नपसी जुल्मन कसीरि व ला**  
**यगफिरन्न जुनुब इल्ला अन्न फगफिरली मगफिरतम्**  
**मिन् इनदिक वरहमनी इन्नक अन्नल गफूररहीम ०**  
 इसके बाद पहले दाहिने कन्धे की तरफ मुंह करके **अरसलामु**



السَّلَامُ وَحَيَّارَبَّنَا بِالسَّلَامِ وَأَدْخِلْنَا دَارَ السَّلَامِ  
وَتَبَارَكْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَيْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

जिन फ़र्जों के बाद सुन्नतें पढ़नी हैं उन फ़र्जों के बाद मुख्तसर सी दुआ करे जैसा कि ऊपर दआ लिखी गयी फिर जल्दी सुन्नतें पढ़े वरना सुन्नतों का सर्वाब कम हो जायेगा और बाकी अज़कार व वजाइफ सुन्नतों के बाद पढ़े और जिन फ़र्जों के बाद सुन्नतें नहीं उन के बाद यह अज़कार भी हैं।

**अज़कार :-** हर नमाज़ के बाद ३३ बार **सुब्हानल्लाहि...**  
**الْحَمْدُ لِلَّهِ** ३३ बार **अल्हम्दु लिल्लाहि**  
**سُبْحَانَ اللَّهِ** ३४ बार **अल्लाहु अकबर** **اللَّهُ أَكْبَرُ** पढ़े-

आयतुल्कुर्सी- फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद आयतुल्कुर्सी पढ़ने की बड़ी फज़ीलत है इसको भी पढ़े।

**अल्लाहु लाइला हु इल्ला हुवल हस्युल कस्युमु ० ला वा खुजुहु सि न तुव व ला नीम ० लहु मफिरसमावा ति व माफिल अदी मन जल्लजी यशफ ओ इन् द हु इल्ला बि इज्जिहि यअ ल मु मा बै न अयदीहिम व मा खल फ हुम वला युहीतु न बिशयइम गिन इल्मिही इल्ला बिमा शा अ व सि अ कुरसियुहुरसमावाति वल अर्द ० वला य ऊ दु ह हिफ़जुहुमा व हुवल अलीयुल अज़ीम ०**

**اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ لَّهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ**

**अलैकुम व रहमवुल्लाहि** **السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ**  
कहे फिर बाँये कन्धे की तरफ मुँह करके सलाम कहे। अब नमाज़ पूरी हो गयी। सलाम करने के वक्त यह खयाल करें कि मैं फरिशतों को सलाम कर रहा हूँ। अब हाथ उठाकर जो जी चाहे अल्लाह से दुआ मांगे और दुआ खत्म करने के बाद दोनों हाथ मुँह पर फेर ले।

**जरूरी याददास्त** फ़र्ज़ नमाज़ की तीसरी और चौथी रकअत में अल्हम्दु के बाद सूरत नहीं पढ़ी जाती। सिर्फ अल्हम्दु पढ़कर रुकू और सजदह कर ले और आखरी रकअत के बाद बैठकर अत्तहियात पढ़े और इसके बाद **दुरूद शरीफ** और दुआ पढ़ कर सलाम फेरे और हाथ उठाकर दुआ मांगे। सलाम फेर कर इमाम दायें या बायें तरफ मुँह कर ले इसलिए कि सलाम के बाद मुक्तदियों की तरफ पीठ करके बैठना मक्रूह है। फ़र्ज़ नमाज़ के बाद खास तौर से दुआ कुबूल होती है। सलाम फेर कर अल्लाह तआला से दीनी व दुनियावी हाजात और जरूरतों के लिये दुआ करे।

**नमाज़ के बाद की दुआएँ व अज़कार**

इस्तगफार-

**अस्तगफिरुल्लाह रब्बी मिन् कुल्ले जम्बि' व अवबु इलैहि** इसके बाद जो दुआ चाहे पढ़े।

**अल्ला हुम्म अव्वरसलामु व मिन्कसरसलामु व इलै-क-यरजिउरसलामु फहैय्यिना रब्बना बिस्मिल्लामि व अद खिल्ला दाररसलामि तबारक तरब्बना व तआलै त या जल्लजालि वल् इक्रामि**

**اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ وَإِلَيْكَ يَرْجِعُ**



## नमाज़े वित्र

**नमाज़े वित्र** वाजिब है। अगर यह छूट जाये तो इसकी कज़ा लाजिम है। इसका वक्त ईशा की फ़र्ज़ के बाद से सुबहे सादिक तक है। बेहतर यह है कि आखिर रात में तहज्जुद के साथ पढ़ी जाये लेकिन जिसको खौफ हो कि उठ नहीं सकेगा वह ईशा की नमाज़ के साथ सोने से पहले पढ़ ले। इसकी तीन रकअतें हैं। दो रकअत पढ़कर काअदह किया जाये और तशहहुद पढ़कर खड़ा हो जाये। तीसरी रकअत में **बिस्मिल्लाह**, **सुरह फातिहा** और **सूरत** पढ़कर दोनों हाथ कानों तक उठाये और **अल्लाहुअकबर** कहता हुआ हाथ बाँध ले और **दुआए कुनूत** आहिस्ता पढ़े कि यह वाजिब है।

अल्लाहुम्म इन्ना नस त इ नु क व नस्तग़िफ़रु क व नुअ मिनु बि क व न त वक्फ़लु अलै क व नुस्नी अलैकल खैर व नशकुरु क वला नक्फ़ुरु क व नख़ ल ओ व नतरुकु मस्यफ़जुरु क ० अल्लाहुम्म ईय्या क नअबुदु व ल क नुसल्ली व नरजुदु व इले क नसआ व नहफिदु व नरजु रह म त क व नख़शा अजाब क इन्न अजाब क बिलकुफ़फ़ारि मुल् हिक ०  
 اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَغِيْثُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنُؤْمِنُ بِكَ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِيْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ وَنُحْلَمُ وَنُتْرِكُ مِنْ يَنْجُرِكَ اَللّٰهُمَّ اَيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نَحْيِيْ وَنَسْجُدُ وَالَيْكَ نَسْتَعِيْ وَنُحْفِدُ وَنَرْجُو رَحْمَتَكَ وَنَخْشَى عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكَافِرِ مُلْحِقٌ

अगर दुआए कुनूत याद न हो तो यह दुआ पढ़े  
 रखना आतिना फिद दुनिया ह स न तव्वे व फिल  
 आखिर ति ह स न तव्वे व फिना अज़ाबन्नार ०

رَبَّنَا اِنَّا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةٌ وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

अगर यह भी याद न हो तो तीन बार यह पढ़े अल्लाहुम्मग़िफ़र लना०  
 नमाज़े वित्र पढ़ने के बाद तीन बार यह पढ़े सुल्हानल् मलिकिल्कुददुस

**मसअला:** अगर दुआए कुनूत पढ़ना भूल गया या किसी को दुआए कुनूत याद न हो और रुकूअ में चला गया तो वापस न लौट बल्कि सज्दए सह कर ले।

**मसअला:** भूल कर पहली या दूसरी रकअत में दुआए कुनूत पढ़ ली तो तीसरी में फिर पढ़े।

## औरतों की नमाज़

औरतें तकबीरे तहरीमा के वक्त कानों तक हाथ न उठाये बल्कि मूढ़े तक उठाये। हाथ नाफ के नीचे न बाँधें बल्कि बायीं हथेली सीना पर छाती के नीचे रखकर उसकी पीठ पर दाहिनी हथेली रखें, रुकूअ में ज्यादा न झुके बल्कि थोड़ा झुके यानी सिर्फ इस कदर झुके कि हाथ घुटनों तक पहुंच जाए पीठ सीधी न करें और घुटनों पर जोर न दें बल्कि महज हाथ रख दें और हाथों की उँगलियाँ मिली हुयी रखें और पाँव कुछ झुका हुआ रखें। मर्दों की तरह खूब सीधा न कर दें। औरतें सिमट कर सज्दा करें यानी बाजू करवटों से मिला दें और पेट रानों से और रान पिण्डलियाँ से और पिण्डलियाँ जमीन से और काअदह में बाँए कदम पर न बैठें बल्कि दोनों पाँव दाहिनी तरफ निकाल दें और बायीं सुरीन पर बैठें। औरतें भी खड़ी हो कर नमाज़ पढ़ें। बहुत सी औरतें फ़र्ज़ और वाजिब व सुन्नत सारी नमाज़ें बैठकर पढ़ती हैं यह बिल्कुल ग़लत तरीका है, नपल के सिवा कोई नमाज़ भी बिला उग्र के बैठ कर पढ़नी जाइज़ नहीं। फ़र्ज़ और वाजिब जितनी नमाज़ें बिगैर **उज्जे शरई** बैठ कर पढ़



चुकी हैं उनकी कजा करें और तौबा करें। औरत मर्द की इमामत हरगिज नहीं कर सकती और सिर्फ औरतें जमाअत करें यह मकरूहे तहरीमी और नाजाइज है। औरतों पर जुम्आ और इदैन की नमाज वाजिब नहीं। पंज वक्ता नमाजों के लिए भी मस्जिद में जाना मना है।

## १९ सूरह

सूरए फातिहा : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमी न ० अर्रहमानिर रहीमि ० मालि कि यौमिददीनि ० ईस्या क नअबुदु व ईस्या क नस्तइनु ० इहदिनस्सिरातल मुस्तकी म ० सिरातल्लज़ी न अनाअम् त अलौहिम ० गौरिल मगदूबि अलौहिम व लददल्लीन ० (आमीन)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ الرَّحِيمِ  
يَوْمَ الْيَوْمِ الَّذِينَ آتَاكَ تَعْدُ وَإِيَّاكَ نُسْتَعِينُ  
إِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ  
غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ

सूरए इन्शिराह : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

अलम् नशरह ल-क सदरक ० व वदअना अन्-क विज़रक ० ललज़ी अन्-क-द ज़हरक ० व रफअना ल-क जिक्करक ० फ़-इन्-न मअल् ऊसरि युस्रा ० इन्-न मअल् ऊसरि युस्रा ० फ़ इज़ा फ़रग-त फ़न्सब ० व इला रब्बि-क फ़रगब ०

أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۖ وَوَضَعْنَا عَنكَ وَزْرَكَ ۖ  
الَّذِي أَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۖ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۖ فَإِنَّ  
مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۖ إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۖ فَإِذَا  
فَرَّغْتَ فَانصَبْ ۖ وَإِلَىٰ رَبِّكَ فَارْغَبْ ۝

सूरए कद्र : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

इश्ना अन्-ज़ल्-नाहु फ़ी लैलतिल् कदरि ० व मा अद-रा-क मा लैलतुल् कदिर ० लैलतुल कदरि ख़ेरुम् मिन् अल्फि शहरिन तनज़लुल्-मलाइकतु वर-रुहु फ़ीहा बिइज्जि रब्बिहिम मिन् कुल्लि अम् रिन् ० सलामुन् हि-य-हवता मतलइल फ़ज़रि ०

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۖ وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۖ  
لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ سَهْرٍ ۖ تَنَزَّلُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ  
فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ مِّنْ كُلِّ أَمْرٍ ۖ سَلَامٌ شَهِىٰ حَتَّىٰ مَطَافِ الْقُبُورِ ۝

सूरए ज़िलज़ाल : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

इज़ा जुल ज़िलतिल अर्दु ज़िल ज़ा लहा ० व अख र जतिल अर्दु असका लहा ० व का लल इनसानु मालहा ० यौ मए ज़िन तु हदिदसु अखबा रहा ० बि अन्-न रब्ब क औ हा लहा ० यौ मए ज़ी यसदु रुश्नासु अशता तल ० लि यु रौ अअ मा लहुम ० फ़ मँस्या अमल मिस का ल ज़ र तिन ख़े रँस्य रह ० व मँस्या अमल मिस का ल ज़ र तिन शर् रँस्य रह ०

إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ۖ وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ  
أَنْفَالَهَا ۖ وَقَالَ الْإِنْسَانُ مَا لَهَا ۖ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ  
أَخْبَارَهَا ۖ بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَىٰ لَهَا ۖ يَوْمَئِذٍ يُصْدَرُ النَّاسُ  
شَتَاتًا ۖ لِّيُرَوْا أَعْمَالَهُمْ ۖ فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ  
خَيْرًا يَرَهُ ۖ وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ۖ



सूरए आदियात : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

वल आदियाति दब हन ० फल मूरियाति कद हन ०  
फल मुगी राति सुब हन ० फ अ सर न बिही नक  
अन ० फ व सत् न बिही जम अन ० इन्नल इन्सा न  
लि रब्बि ही ल क नद ० व इन्नहू अला जालि क ल  
शहीद ० व इन्नहू लि हुब्बिल खैरि ल शदीद ० अ  
फला याअ लम् इजा बु अ सि र मा फिल् कुबुरि ० व  
हुस्सि ल मा फिस् सुदुरि ० इन्-न रब्ब हुम बि हिम  
यौ मए ज़िल ल खबीर ०

وَالْعَدِيثِ صَبْحًا ۝ فَالْمُورِتِ قَدْحًا ۝ فَالْبُعِيرِ  
صَبْحًا ۝ فَاتَرْنَ بِهِ نَقْعًا ۝ فَوْسَطَنَ بِهِ جَمْعًا ۝  
إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنُودٌ ۝ وَإِنَّهُ عَلَى  
ذَلِكَ لَشَهِيدٌ ۝ وَإِنَّهُ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيدٌ ۝  
أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُورِ ۝ وَحُصِّلَ  
مَا فِي الصُّدُورِ ۝ إِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ  
لَّخَبِيرٌ ۝

सूरए कारिआ : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

अल कारि अ तु ० मल कारिअह ० व मा अदरा क  
मल् कारिअह ० यौ म यक् नुञ्जासु कल फरा शिल  
मब सूस ० व तक्नुल् जिबालु कल ईह निल मन  
फूशि ० फ अम्मा मन् स कु लत् म वा जी नुह ० फ हु  
व फी ई शतिर रादि यह ० व अम्मा मन खफफत्  
मवाजी नुह ० फ उम्मुह हा वीयह ० वमा अदरा क  
माहियह ० नारन हामियह ०

الْقَارِعَةُ ۝ مَا الْقَارِعَةُ ۝ وَمَا أَذْرُكَ مَا الْقَارِعَةُ ۝  
يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ ۝ وَتَكُونُ  
الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوشِ ۝ فَأَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ۝  
فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ ۝ وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ۝  
فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ ۝ وَمَا أَذْرُكَ مَا هِيَةٌ ۝ نَارُ حَامِيَةٍ ۝

सूरए तकासुर : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

अल्हा कुगुत तकासुरु ० हत्ता नुरतु मुल् मका बि र  
० कल्ला सौ फ ताअ लम् न ० सुम्-म कल्ला सौ फ  
ताअ ल मू न ० कल्ला लौ ताअ लम् न ईल मल  
यकीन ० ल त र वु झल जही म ० सुम्-म ल त र वु झ  
हा ऐनल यकी न ० सुम्-म ल वुस् अ लुन्-न यौ मई  
ज़िन अनिन् नहीम ०

أَلْهَكُمُ التَّكَاثُرُ ۝ حَتَّى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۝ كَلَّا سَوْفَ  
تَعْلَمُونَ ۝ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ  
عِلْمَ الْيَقِينِ ۝ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيمَ ۝ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا  
عَيْنَ الْيَقِينِ ۝ ثُمَّ لَتَسْأَلُنَّ يَوْمَئِذٍ النَّعِيمَ ۝

सूरए अस्र : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

वल अस्रि ० इन्नल् इन्सा न लफी खसुरिन ०  
इल्लल्लजी न आ मनू व अ मिलस् सालिहाति व त  
वा सौ बिल हक्क ० व त वा सौ बिस् सबरि ०



وَالْعَصْرِ ۝ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَفِي خُسْرٍ ۝ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَّصُوا بِالْحَقِّ وَتَوَّصُوا بِالصَّبْرِ ۝

सूरएहु म ज़ह : बिरिगल्लाहिर रहमानिर रहीम

वै लुल लि कुल्लि हु म ज़तिल लु म ज़ति ० निल्लज़ी ज  
म अमा लोवै व अदद दह ० यह सबु अन्-न मा लहु  
अखल दह ० कल्ला ल युम ब जन्न फिल हु त मति ०  
वमा अदरा कमल् हु त मह ० नारुल्ला हिल् मुकद  
तुल ० लती तत्-त लिओ अलल् अफ़ इ दह ० इन्नहा  
अलैहिम् मुअ्सद ० फ़ी अम् दिम मुमद दह ०

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ ۝ الَّذِي جَمَعَ مَالًا وَعَدْدَةً ۝ يَحْسَبُ  
أَنَّ مَالَهُ أَخْلَدَهُ ۝ كَلَّا لَيُنْبَذَنَّ فِي الْحُطْبَةِ ۝ وَمَا  
أَدْرَاكَ مَا الْحُطْبَةُ ۝ نَارُ اللَّهِ الْمُوقَدَةُ ۝ الَّتِي تَطْلُعُ  
عَلَى الْآفِدَةِ ۝ إِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّوَصَّدَةٌ ۝ فِي عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ۝

सूरएफील : बिरिगल्लाहिर रहमानिर रहीम

अलम् त-र कै-फ़ अ ल रब्बु क बि असूहा बिल  
फीलि ० अ लम् यज अल कै दहुम् फ़ी तदलीलैव ० व  
अर स ल अलै हिम् तैरन अबाबील ० तरमी हिम् बि  
हिजा र तिम् मिन् सिज्जील ० फ़ ज़ अ ल हुम् क अस्  
फ़िम् मा कूल ०

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ ۝ أَلَمْ يَجْعَلْ  
كَيْدَهُمْ فِي تَضْلِيلٍ ۝ وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ ۝  
تَرْمِيمًا بِحَارَةٍ مِّنْ سِجِّيلٍ ۝ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّا كُوِيَ ۝

सूरएकुरैश : बिरिगल्लाहिर रहमानिर रहीम

ले ईला फ़ि कुरैशिन ० ई ला फ़ि हिम् रिह लतश  
शिताए वरसेफ़ ० फ़ल याअ बुद् रब्ब-ब हाज़ल  
बैतिल ० लज़ी अत् अ म हुम् मिन् जू ईवै ० व आ म  
न हुम् मिन् खोफ़ ०

لَا يَلْفُ قَرِيشٍ ۝ الْفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَاءِ وَالصَّيْفِ ۝  
فَلْيَعْبُدُوا رَبَّ هَذَا الْبَيْتِ ۝ الَّذِي أَطْعَمَهُمْ مِّنْ  
جُوعٍ ۝ وَآمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۝

सूरएमाअून : बिरिगल्लाहिर रहमानिर रहीम

अर है तल्लज़ी यु कज़िबु बिददीनि ० फ़ ज़ालि कल  
लज़ी य द अ ऊल यती म ० वला य हुददु अला त आ  
मिल मिसकीनि ० फ़वै लुलु लिल मुसल्ली नल ०  
लज़ी न हुम् अल सला तीहिम् सा हु नल् ० लज़ी न  
हुम् यूरा ऊन ० व यम् न ऊनल् मा ऊन ०

أَرَأَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالْإِيمَانِ ۝ فَذَلِكَ الَّذِي يَدْعُ  
الْيَتِيمَ ۝ وَلَا يَحْضُ عَلَى طَعَامِ الْيُسْكِينِ ۝ فَوَيْلٌ



لِلْمُصَلِّينَ ۝ الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۝

الَّذِينَ هُمْ يُرَآؤُونَ ۝ وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ ۝

सूरए कौसर : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम  
इब्ना आअतैना कल् कौसर ० फ सल्लि लिरब्बि क  
वन्हर ० इन्-न शानि अक हुवल अब्-तर ०

إِنَّا أَعْطَيْنَكَ الْكَوْثَرَ ۝ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝

إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ۝

सूरए काफिरुन : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम  
कुल या अस्युहल काफिरु न ० ला आअबुदु मा  
ताअबुदु न ० व ला अन्तुम् आबिदु न मा आअबुदु  
० व ला अना आबिदुम् मा अबतुम् ० व ला अनतुम्  
आबिदु न मा आअबुदु ० लकुम् दीनुकुम् वलि  
यदीन ०

قُلْ يَٰأَيُّهَا الْكَافِرُونَ ۝ لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ۝ وَلَا

أَنْتُمْ عِبُدُونَ مَا أَعْبُدُ ۝ وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُمْ ۝ وَلَا

أَنْتُمْ عِبُدُونَ مَا أَعْبُدُ ۝ لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ ۝

सूरए नसर : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम  
इजा जा अ नसरुल्लाहि वल फतुहु ० व र ऐतब्बा स  
यद खुलु न फी दीनिल्लाहि अफवाजा ० फसब्बिह  
बिहग्दि रब्बि क वस्तगफिर हु- इब्नहु का न तव्वाबा ०

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ ۝ وَرَأَيْتَ النَّاسَ

يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا ۝ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ

رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ۚ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا ۝

सूरए लहब : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम  
तब्बत यदा अभी ल ह बिर्व व तब्ब ० मा अगना  
अनुहु मालुहु व मा क स ब ० स यस्ला नारन जा त  
ल ह बिर्व ० वगुर अतुहु हग्मा लतल् ह तबि ० फी  
जीदिहा हब्लुम् मिग्मसद ०

تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ ۝ مَا أَغْنَىٰ عَنْهُ مَالُهُ وَمَا

كَسَبَ ۝ سَيَصْلَىٰ نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝ وَامْرَأَتُهُ

حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝ فِي جِيدِهَا حَبْلٌ مِّن مَّسَدٍ ۝

सूरए इक्लास : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम  
कुल् हु वल्लाहु अहद ० अल्लाहुस् समद ० लम् यलिद  
वलम् युलद ० वलम् यकुल्लहु कुफुवन् अहद ०

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْهُ وَلَمْ

يُولَدْ ۝ وَلَمْ يَكُن لَّهُ كُفُوًا أَحَدٌ ۝

सूरए फलक : बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम  
कुल् अऊजु बिरब्बिल फलकि ० मिन् शरिमा  
खल क ० व मिन् शरि गारिफिन् इजा वकब  
० व मिन् शरि नफफासाति फिल् ऊकदि ०  
व मिन् शरि हासिदिन् इजा हसद ०



قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝ وَ  
مِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۝ وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثِ  
فِي الْعُقَدِ ۝ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۝

सूरएनास : बिरस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम  
कुल अऊजु बिरब्बिन्नासि ० मलिकिन्नासि  
इलाहिन्नासि ० मिन शरिल वरचासिल-  
खन्नासिल ० लजी यु वरचिसु फी सुदरिन्नासि  
० मिनल् जिन्नति वन्नास ०

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝ مَلِكِ النَّاسِ ۝ إِلَهِ  
النَّاسِ ۝ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝ الَّذِي  
يُوسَّوْسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ۝ مِنَ الْغَيْثِ وَالنَّاسِ ۝

### जनाज़ा का बयान मय्यित के नहलाने का तरीका

मय्यित को नहलाना फ़र्जे किफाय है बाज लोगों ने गुस्ल दे दिया तो सब से साकित हो गया नहलाने का तरीका यह है कि जिस चारपायी या तख्त या तख्ता पर नहलाने का इरादा हो उसको तीन या पाँच या सात बार धुनी दें यानी जिस चीज में वह खुशबू सुलगती हो उसे उतनी बार चारपाई वगैरह के गिर्द फिराए और उस पर मय्यित को लिटा कर नाफ से घुटने तक किसी कपड़े से छुपा दे फिर नहलाने वाला अपने हाथ पर कपड़ा लपेट कर पहले इस्तिन्जा कराए फिर नमाज के ऐसा वुजू कराए यानी मुँह फिर कुहनियों समीत हाथ धोए फिर सर का मसह करे फिर

पाँव धोए मगर मैइत के वुजू में गट्टों तक पहले हाथ धोना और कुल्ली करना और नाक में पानी डालना नहीं है हाँ कोयी कपड़ा या रूई की फरेरी भिगोकर दाँतों और मसूढ़ों और होंटों, नथनों पर फेर दे फिर सर और दाढ़ी के बाल हों तो गुल खैरु से धोये यह न हो तो पाक साबुन बेसन या यह न हो तो खाली पानी ही काफी है फिर बाँए करवट पर लिटा कर सर से पाँव तक बेरी का पानी बहाए कि तख्ता तक पहुँच जाए फिर दाहनी करवट पर लिटा कर यँ ही करें और बेरी के पत्ते का उबाला हुआ पानी न हो तो खालिस पानी नीम गर्म काफी है फिर टेक लगा कर उठाए और नर्मी के साथ नीचे को पेट पर हाथ फेरे अगर कुछ निकले तो धो डाले वुजू और गुस्ल दुबारा न कराए फिर आखिर में सर से पाँव तक काफूर का पानी बहाए फिर इसके बदन को किसी कपड़े से धीरे धीरे पोछ दें।

**इन्तिबाह :** एक बार सारे बदन पर पानी बहाना फ़र्ज है और तीन मरतबा सुन्नत जहाँ गुस्ल दें मुस्तहब यह है कि परदा कर लें कि सिवाए नहलाने वालों और मददगारों के दुसरा न देखे।

**मसअला:** वुजू पहले होना चाहिये नहलाने के बाद वुजू गलत है।

### कफ़न का बयान

मय्यित को कफ़न देना फ़र्जे किफाय है। कफ़न के तीन दर्जे होते हैं (१) ज़रूरी (२) किफायत (३) सुन्नत, मर्द के लिये कफ़न सुन्नत तीन कपड़े हैं, लिफाफा, एज़ार, कमीज़ और औरत के लिए कफ़न सुन्नत पांच कपड़े हैं- लिफाफा, एज़ार कमीज़, ओढ़नी और सीना बन्द। कफ़न किफायत मर्द के लिए दो कपड़े हैं लिफाफा व एज़ार औरत के लिए कफ़न किफायत तीन कपड़े हैं लिफाफा, एज़ार, ओढ़नी या लिफाफा, कमीज़, ओढ़नी।



कफने जरूरत मर्द औरत दोनों के लिये जो मयस्सर आए और कम से कम इतना तो हो कि सारा बदन ढक जाए।

(आलमगीरी बगैरह)

## कफन पहनाने का तरीका

मय्यित के गुस्ल देने के बाद बदन किसी पाक कपड़े से आहिस्ता से पोंछ ले ताकि कफन तर न हो और कफन को एक या तीन या पाँच या सात बार धुनी दे ले इससे ज्यादा नहीं फिर कफन यूँ बिछाए कि पहले बड़ी चादर फिर एजार (तहबन्द) फिर कफनी फिर मय्यित को उस पर लिटाए और कफनी पहनाए और दाढ़ी और तमाम बदन पर खुशबू मले और मवाजए सुजुद यानी माथे नाक, हाथ, घुटने और कदम पर काफूर लगाए फिर एजार (तहबन्द) लपेटे पहले बाएँ फिर दाएँ तरफ से फिर लिफाफा लपेटे पहले बाएँ फिर दाएँ तरफ से ताकि दाहिना ऊपर रहे और सर और पाँव की तरफ बाँध दें कि उड़ने का डर न रहे औरत को कफन पहनाकर उसके बाल के दो हिस्से करके कफनी के ऊपर सीना के ऊपर डाल दे और ओढ़नी आधी पीठ के नीचे से बिछा कर सर पर लाकर मुँह पर मिस्ले नकाब के डाल दे कि सीना पर रहे कि इसकी लम्बायी आधी पीठ से सीना तक है और चौड़ायी एक कान की लौ से दुसरे कान की लौ तक और यह जो लोग किया करते हैं कि जिन्दगी की तरह उढ़ाते हैं, गलत व खिलाफे सुन्नत है फिर बदस्तूर एजार व लिफाफा लपेटे फिर सबके ऊपर सीना बन्द पिस्तान के ऊपर से रान तक लाकर बाँधे।

## नमाज़े जनाज़ा का तरीका

जनाज़ा की नमाज़ फ़र्जे किफ़ाया है कि एक ने भी पढ़ली तो सब बरीउज़्ज़िमा हो गये वरना जिस जिसको खबर पहुंची थी और न पढ़ी गुनहगार हुआ इसकी फ़र्जियत का जो इनकार करे वह काफ़िर है।

नमाज़े जनाज़ा के पहले यूँ नीयत करे :

नवैतु अल ओ वदिद य लिल्लाहि तआला अर ब अ तकबीराति सलातिल जना जति अरसना ओ लिल्लाहि तआला वददुआओ लिहाज़ल मय्यिति इक्तदयतु बिहाज़ल इमामि मु त वज्जिहन एला जि ह तिल काअबतिश शरीफति अल्लाहु अकबर

نَوَيْتُ أَنْ أُوَدِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى أَرْبَعَ تَكْبِيرَاتٍ صَلَوةَ الْجَنَازَةِ ۝ الشَّاءَ لِلَّهِ تَعَالَى وَالِدُّعَاءُ لِهَذِهِ الْمَيِّتِ ۝ اقْتَدَيْتُ بِهَذَا الْإِمَامِ مُتَوَجِّهًا إِلَى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

फिर कान तक हाथ उठाकर अल्लाहु अकबर कहता हुआ हाथ नीचे लाए और नाफ के नीचे हस्बे दस्तूर बाँध ले और सना पढ़े यानी सुब्हा नकल्लाहुम्म व बिहन्दि क व तबारकरन्मु क व तआला जददु क व जल्ल सनाओ क व लाइला हजेरु क

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ

फिर बगैर हाथ उठाए अल्लाहु अकबर कहे और दुरुद शरीफ पढ़े बेहतर दुरुद शरीफ वही है जो नमाज़ में पढ़ा जाता है अगर कोयी दूसरा दुरुद पढ़े जब भी हर्ज नहीं फिर बगैर हाथ उठाए अल्लाहु अकबर कहे और इसके बाद अपने और मय्यित के लिए नोज तमाम मोमिनीन व मुमिनात के लिए, दुआए जनाज़ा, पढ़कर अल्लाहु अकबर कह के दोनों हाथ छोड़ दे और दोनों तरफ सलाम फेर दे।

**नोट :** मय्यित अगर नाबालिग लड़का है तो तीसरी तकबीर के



बाद वह दुआ पढ़े जो नाबालिग लड़का के लिए है और अगर नाबालिग लड़की है तो वह दुआ पढ़े जो नाबालिग लड़की के लिए है और जिसे याद न हो बच्चों के लिये भी बड़ी मैइत की दुआ पढ़ले।

### कब्र में मय्यित के उतारने वगैरह की दुआ

मय्यित की आँखे बन्द करते वक्त, उसके आअज़ा को सीधा करते वक्त गुस्ल के वक्त कफन पहनाने के वक्त, चारपायी या ताबूत वगैरह पर रखते वक्त और कब्र में मय्यित के उतारते वक्त यह दुआ मुस्तहब है।

बिस्मिल्लाहि व अला मिल्लति रसूलिल्लाहि  
सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम.

بِسْمِ اللَّهِ وَعَلَى مِلَّةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

### कब्र पर मिट्टी देते वक्त यह पढ़े

पहली दफा-मिनहा खलकनाकुम ० مِنْهَا خَلَقْنَاكُمْ

दूसरी दफा-वफीहा नुईदकुम ० وَفِيهَا نَعِيدُكُمْ

तीसरी दफा-वमिनहा नुखरिजुकुम तारतन उखरा

وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَى

### दुआए जनाज़ह

बड़ी मैय्यित के लिए :

अल्लाहुम्मरा फिरलि हय्यिना व मय्यितिना व  
शाहिदिना व ग़ाइबिना व सगीरिना व कबीरिना व  
ज़क रिना व उनसाना अल्लाहुम्म मन् अहयैय त ह  
मिन्ना फ़ अहयिही अलल् इस्लामि व मन् त  
वफ़फ़य त ह मिन्ना फ़ त वफ़फ़ह अलल ईमान

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّينَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيرِنَا وَكَبِيرِنَا  
وَذَكَرِنَا وَانْثُنَا اللَّهُمَّ مَنْ أَحْيَيْتَهُ مِنَّا فَأَحْيِهِ عَلَى الْإِسْلَامِ وَمَنْ  
تَوَفَّيْتَهُ مِنَّا فَتَوَفَّهُ عَلَى الْإِيمَانِ

नाबालिग लड़के के लिए :

अल्लाहुम्मज्ज अलहु लना फर तँव वज्ज अलहु लना अज़व  
व नुख् रव वज्ज अलहु लना शाफिओ व मुशफ़अन् ०

اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا قَرْنًا وَاجْعَلْهُ لَنَا أَجْرًا  
وَذُخْرًا وَاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَمُشَفَّعًا

नाबालिग लड़की के लिए :

अल्लाहुम्मज्ज अलुहा लना फर तँव वज्ज अलुहा लना  
अज़ रव व नुख् रव वज्ज अलुहा लना शाफिअतँव व  
मुशफ़अतन् ०

اللَّهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا قَرْنًا وَاجْعَلْهَا لَنَا أَجْرًا  
وَذُخْرًا وَاجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَمُشَفَّعَةً

### दुआए अकीकह

अल्लाहुम्म हाज़िही अकीकतुब्नी फ़ुलानिन् द मु हा  
बि द मिही व लहुमुहा बि लहुमिही व अज़मुहा बि  
अज़मिही व जिलदुहा बिजिल्दिही व शअरुहा बि  
शअरिही अल्लाहुम्मज्ज अलहा फिदाअल लि इब्नी  
मिननुनार बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर ०

اللَّهُمَّ هَذِهِ عَقِيْقَةُ ابْنِي فَلَانٍ دَمُهَا بِدَمِهِ وَلَحْمُهَا  
بِلَحْمِهِ وَعَظْمُهَا بِعَظْمِهِ وَجِلْدُهَا بِجِلْدِهِ وَشَعْرُهَا بِشَعْرِهِ  
اللَّهُمَّ اجْعَلْهَا فِدَاءً لَابْنِي مِنَ النَّارِ بِسْمِ اللَّهِ اللَّهُ أَكْبَرُ



अगर बाप जिबूह करने वाला हो तो ऐसा कहे वरना दुसरा इब्नी की जगह फलाँ यानि उस लड़के का नाम वालिद के नाम के साथ ले - (जैसे मुहम्मद औन कादरी बिन मुहम्मद मुशाहिद हुसैन कादरी)

लड़की के लिए यह दुआ पढ़े :

अल्लाहुम्म हाजिही अकीकतु बिन्ती फुला न तिन दमुहा बि दमिहा व लहमुहा बि लहमिहा व अजमुहा बि अजमिहा व जिल्दुहा बि जिल्दिहा व शअरोहा बि शअरिहा अल्लाहुम्मज अल्हा फ़िदाअल लि बिन्ती मिनन् नार - बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर०

اللَّهُمَّ هَذِهِ عَقِيْقَةُ بِنْتِي فَلَانَةٍ دَمُّهَا يَدٌ مِّمَّا وَحَمُّهَا يَلْحِقُهَا وَعَظْمُهَا يَعْظِمُهَا وَجِلْدُهَا يَجْلِدُهَا وَشَعْرُهَا يَشْعُرُهَا اللَّهُمَّ اجْعَلْهَا فِدَاءَ لَبْنَتِي مِنَ النَّارِ بِسْمِ اللَّهِ اللَّهُ أَكْبَرُ

## नीयते कुबानी

इब्नी वज्जहतु वज्जहि य लिल्लज़ी फ त ररसमावाति वल अर द हनीफ़े व मा अना मिनल मुशरिकीन। इब्न सलाति व नुसुकी व मह्या य व म माती लिल्लाहि रब्बिल आ ल मी न। ला शरी क लहु व बिज़ालि क उमिर्तु व अना मिनल मुस्लिमीन। अल्लाहुम्म मिन् क व ल क बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर

إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ

رَبِّ الْعَالَمِينَ لَا شَرِيكَ لَهُ وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ  
اللَّهُمَّ مِنْكَ وَلَكَ بِسْمِ اللَّهِ اللَّهُ أَكْبَرُ

पढ़कर जिबूह करे। जिबूह के बाद अगर अपनी तरफ से कुरबानी की है तो इस तरह कहे-

अल्लाहुम्म तक्बल्लहु मिन्नी कमा तक्बल्ल त मिन खलीलि क सय्यिदिना इब्नाही म व हबीबि क सय्यिदिना मुहम्मदिन अलैहिरसलातु वसल्लाम् ०

اللَّهُمَّ تَقَبَّلْهُ مِنِّي كَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ خَلِيلِكَ إِبْرَاهِيمَ وَحَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ

अगर किसी दुसरे के नाम से करे तो लफ्ज़ मिन्नी की जगह मिन फलाँ इब्न फलाँ कहे (जैसे मुहम्मद मुशाहिद हुसैन कादरी इब्न एजाज़ हुसैन कादरी)

## रमजानुल्लुबाश्क

ऐ ईमान वालों तुम पर रोज़े फ़र्ज किये गये। (कुरआन) अहादीसे मुबारक में रमजान की बेशुमार फ़ज़ीलते आयी हैं, निहायत खैर व बरकत वाला महीना है। इसमें किसी अमले मुस्तहब का सवाब दूसरे महीने के फ़र्ज के बराबर है और फ़र्ज का सवाब ७० के बराबर होता है। रोज़े की फ़ज़ीलत के लिए यह काफी है कि हदीस शरीफ में है कि अल्लाह ने फरमाया ! रोज़ा मेरे लिए है और इसकी जज़ा मैं दूँगा।

रोज़ह की नीयत नवैतु अन् अशू मु ग़ददन् लिल्लाहि तआला मिन् फ़र-द रमदा-न हा ज़ा०



इफ्तार की दुआ :

अल्ला हुम्म ल-क सुम्तु व बि-क आ मन्तु व  
अलै-क तवक्कल्लु व अला रिज़्क-क अफ  
तरतु०

और इफ्तार के बाद यह दुआ पढ़े :

ज़ ह बज़् जम्मा ओ वब तल्लतिल् ओरुक्कु व  
सबतल् अज़्ज़ इन्शा अल्लाहु०

## तरावीह का बयान

**मसअला:** मर्द व औरत सब के लिए तरावीह सुन्नते मुअक्किदह है इस का छोड़ना जाइज नहीं औरतें घरों में अकेले अकेले तरावीह पढ़ें। मस्जिदों में न जायें। घर में भी जमाअत से न पढ़ें कि औरतों की जमाअत मकरूहे तहरीमी व गुनाह है। (दुर्रै मुख्तार जिल्द १ पृ० ४७२)

तरावीह बीस रकअतें दस सलाम से पढ़ी जायें यानी हर दो रकअत पर सलाम फेर दे और हर चार रकअत पर इतनी देर बैठना मुस्तहब है जितनी देर में चार रकअतें पढ़ी हैं और इख्तियार है इतनी देर चाहे चुप बैठा रहे चाहे कलिमा या दुरूद शरीफ पढ़ता रहे या कोई भी दुआ पढ़ता रहे आम तौर पर यह दुआ पढ़ी जाती है।

तरावीह तरावीह

सुब्हा न जिल् मुल्कि वल् म ल कृति सुब्हा न जिल्  
इज़्ज़ति वल् अज़्ज़मति वल् हैबति वल् क़दरति वल्  
किब्रियाए वल् ज बरुति सुब्हानल् ग़लिकिल् हस्पिल्  
लज़ी ला यनामु व ला यमूतु सुब्बुहुन् क़ददुसुब् रब्बुना  
व रब्बुल् मलाए कति वरुहु० अल्लाहुम्म अज़िर्ना  
मिनझारि या मुजीरु या मुजीरु या मुजीरु बि  
रहमति-क या अर हमरीहिमीन०

سُبْحَانَ ذِي الْمَلِكِ وَالْمَلَكُوتِ سُبْحَانَ ذِي  
الْعِزَّةِ وَالْعَظَمَةِ وَالْهَيْبَةِ وَالْقُدْرَةِ وَالْكَرْبَاءِ  
وَالْجَبَرُوتِ سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْعَلِيِّ الَّذِي لَا يَنَامُ  
وَلَا يَمُوتُ سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ رَبُّ الْمَلَائِكَةِ  
وَالرُّوحِ أَللَّهُمَّ اجْرِنَا مِنَ الشَّيْءِ الْمَجِيذِ يَا مُجِيرُ  
يَا مُجِيرُ بِرَحْمَتِكَ يَا رَحِمَ الرَّاحِمِينَ (مخافة)

नौ (९) मिनट में नौ (९) कुरान पाक और एक  
हज़ार (१०००) आयतों के बराबर सवाब

१. सूरए फ़ातिहा (३) तीन बार पढ़ने का सवाब दो  
बार कुरआन मजीद पढ़ने के बराबर है। (तफ्सीर मज़हरी)

२. आयतुलकुरसी चार (४) बार पढ़ने का सवाब एक बार  
कुरआन मजीद पढ़ने के बराबर है। (तफ्सीर मवाहिबुर रहमान)

३. सूरए क़द्र चार (४) बार पढ़ने का सवाब एक बार  
कुरआन पढ़ने के बराबर है। (फिरदौस वैलमी)

४. सूरए ज़िल्ज़ाल दो (२) बार पढ़ने का सवाब एक बार  
कुरआन मजीद पढ़ने के बराबर है। (तिरमिज़ी शरीफ)

५. सूरए आदियात दो (२) बार पढ़ने का सवाब एक बार  
कुरआन मजीद पढ़ने के बराबर है। (तफ्सीर मवाहिबुर रहमान)

६. सूरए तकासुर एक (१) बार पढ़ने का सवाब एक हज़ार  
(१०००) आयतों के पढ़ने के बराबर है। (मिशकात शरीफ)

७. सूरए काफिरून चार (४) बार पढ़ने का सवाब एक बार  
कुरआन मजीद पढ़ने के बराबर है। (तिरमिज़ी शरीफ)



८. **सूरए नस्र चार (४) बार पढ़ने का सवाब** एक बार कुरआन मजीद पढ़ने के बराबर है। (तिरमिजी शरीफ)

९. **सूरए अख्लास तीन (३) बार पढ़ने का सवाब** एक बार कुरआन मजीद पढ़ने के बराबर है। (बुखारी शरीफ)

बस इतना अगर कोई पढ़ ले तो नौ (९) **कुरआन शरीफ और एक हज़ार (१०००) आयतों** के पढ़ने के बराबर सवाब पा सकता है।

इन सूरतों को पढ़कर आप अपने खानदान के मरहूमों और तमाम मुसलमान मरहूमों की रूह को इसाले सवाब कर सकते हैं।

## तरीकए फ़ातिहा व न्याज़

मुसलमानों को दुनिया से जाने के बाद जो सवाब कुरआन मजीद का तन्हा या खाने वगैरह के साथ पहुँचाते हैं उर्फ़ मे इसे **फ़ातिहा** कहते हैं कि इसमें सूरए फ़ातिहा पढ़ी जाती है। औलियाए किराम को जो इसाले सवाब करते हैं उसे ताअज़ीमन नज़्र व न्याज़ कहते हैं। इसका तरीका यह है

वज़ू करके पहले तीन बार या ज्यादा **दुरूद शरीफ** पढ़े फिर एक बार **सूरए फ़ातिहा** पढ़े फिर एक बार **आयतुलक़ुरसी** पढ़े फिर तीन बार या सात बार या ग्यारह बार **सूरए अख्लास** पढ़े फिर तीन बार या ज्यादा **दुरूद शरीफ** पढ़े। इसके बाद दोनों हाथ उठा कर अर्ज कर कि **इलाही!** मेरे इस पढ़ने (अगर खाना, कपड़ा वगैरह भी हों तो उनका नाम भी शामिल करे और इस पढ़ने और इन चीजों के देने पर) जो सवाब मुझे अता हो उसे मेरे अमल के लाएक न दे बल्कि अपने करम के लाएक अता फ़रमा और इसे मेरी तरफ से फुला वलीयल्लाह मसलन् **हुज़ूर पुरनूर सय्यिदिना गौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्ह**

की बारगाह में नज़्र पहुँचा और उनके आबाए किराम और मशाइखे एजाम व औलाद अम्ज़ाद, मुरीदीन व मुहिब्बीन और मेरे माँ बाप और **फुलाँ और फुलाँ** (जिसको सवाब पहुँचाना हो उसका नाम ले) और **सय्यिदुना आदम अलैहिस्सलाम** से रोजे कयामत तक जितने मुसलमान हो गुज़रे या मौजूद हैं या कयामत तक होंगे सबको **पहुँचा। आमीन या रब्बल आलमीन बि रहमति क या अरहमर राहिमीन०** (अहकामे शरीअत)

## मस्तूब व मकबूल दुआएँ

दुआ घर में दाखिल होते वक्त :

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَ الْوَلَجِ وَخَيْرَ الْخُرْجِ  
بِسْمِ اللَّهِ وَلَجْنَا وَعَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا (مشکوٰۃ شریف)

**अल्लाहुम्म इब्नी अस अ लु क खैरल मौलिजी व खैरल मख़िज़ि बिस्मिल्लाहि व लज्जा व अलल्लाहि तवक्कलूना** (मिशक़ात)

**तर्जिमा-** ऐ अल्लाह मैं तुझ से सुवाल करता हूँ अच्छे दाखिल होने और बेहतर निकलने का अल्लाह के नाम से दाखिल हुए और हम ने अल्लाह पर भरोसा किया। (फिर घर वालों को सलाम करें।) घर से बाहर निकलते वक्त :

بِسْمِ اللَّهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ وَالْحَوْلُ وَالْأَقْوَةُ إِلَّا بِاللَّهِ

**बिस्मिल्लाहि त वक्कलतु अलल्लाहि व ला हौ ल वला कुव्व त इल्ला बिल्लाह।**

**तर्जिमा-** मैं अल्लाह का नाम लेकर निकला, मैंने अल्लाह पर भरोसा किया गुनाहों से बाज़ रहने और इबादत व नेकी करने की ताक़त अल्लाह ही की तरफ से है :



खाना शुरु करते वक्त : **بِسْمِ اللَّهِ وَعَلَى بَرَكَاتِهِ** (मुस्तदरक)  
**बिस्मिल्लाहि व अलाबरक तिल्लाहि**

**तर्जमा-** मैंने अल्लाह के नाम से और अल्लाह की बरकत पर खाना शुरु किया।

खाने के बाद यह दुआ पढ़े :

**الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَهَدَانَا وَجَعَلَ لَنَا الْيُسْرَى**

**अलहम्दु लिल्लाहिल्लजी अत अम ना व सकाना व हदाना व ज अल ना गिनल् मुस्लिमीन**

**तर्जमा-** तमाम खूबियाँ उस अल्लाह के लिए हैं जिसने हमें खिलाया और पिलाया और हिदायत दी और मुसलमान बनाया।

सोते वक्त यह दुआ पढ़े :

**اللَّهُمَّ بِاسْمِكَ أَمُوتُ وَأَحْيَا**

**अल्लाहुम्म बि इस्मि क अमूतु व अह्या** (बुखारी)

**तर्जमा-** ऐ अल्लाह मैं तेरा नाम लेकर मरूँ और तेरा नाम लेकर ज़िन्दार हूँ।

इसके बाद **३३ बार सुब्हानल्लाहि ३३ बार अलहम्दु लिल्लाहि** और **३४ बार अल्लाहु अकबर** फिर एक मरतबा आयतुल कुसी एक बार सूरह फातिहा और एक बार सूरह इय्यास और एक बार सूरह काफिरुन इसके बाद तीन मरतबा पढ़े।

**अस्तगफिरुल्लाहुल लजी लाइला ह इल्ला हुवल हस्युल कस्युमु व अतुबु इलैहि**

**أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ**

**जब नींद से बेदार हो :**

**الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَ مَا مَاتْنَا وَإِلَيْهِ الشُّوْرُ**

**अलहम्दु लिल्लाहिल्लजी अह्याना वा अद मा अमा त ना व एलैहिन् नुशुर** (बुखारी व मुस्लिम)

**तर्जमा-** सब खूबियाँ उस अल्लाह के लिए हैं जिसने हमको ज़िन्दा किया बाद मौत देने के और उसी की तरफ जाना है।

**बैतुल खला जाते वक्त :**

**اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْخُبْثِ وَالْخَبَائِثِ**

**अल्लाहुम्म इब्नी अ ऊ नु बि क गिनल खुब्सि वल खबाइसि**

**तर्जमा-** ऐ अल्लाह मैं पनाह चाहता हूँ खबीस जिनो से मर्द हों या औरत। (बुखारी जिल्द २ सफ़ा १३६)

**बैतुल खला से निकलते वक्त :**

**गुफ़ान क** कहे इसके बाद यह दुआ पढ़े-

**الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنِّي الْأَذَى وَعَافَانِي**

**अलहम्दु लिल्लाहिल लजी अज़ ह ब अझिल अज़ा व आफानी**

**तर्जमा-** सब ताअरीफें अल्लाह के लिए हैं जिसने मुझे ईज़ा देने वाली चीज़ दूर की और मुझे आफियत दी।

**नया लिबास पहनते वक्त :**

**الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي كَسَانِي مَا أَوْرَى بِهِ عَوْرَتِي وَاجْتَمَلَ بِهِ فِي حَيَاتِي**

**अलहम्दु लिल्लाहिल लजी कसानी मा ओवारी बिही औरती व अत जम्मलु बिही फी हयाती**

**तर्जमा-** सब ताअरीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने मुझे को कपड़ा पहनाया जिससे मैं अपनी शर्मगाह को छुपाता हूँ और अपनी जिन्दगी में इससे खूबसूरती हासिल करता हूँ :

**सफर का इरादा हो तो यह पढ़े :**

**اللَّهُمَّ بِكَ أَصْلُ وَبِكَ أَحْوَلُ وَبِكَ أَسِيرُ** (हम्रु मयि)



अल्लाहुम्म बि क असूलु व बि क अहलु व बि क असीरु

**तर्जिमा-** ऐ अल्लाह मैं तेरी ही मदद से दुश्मनो पर हमला करता हूँ और तेरी ही रहमत से उनके दफ़् अ करने की तदबीर करता हूँ और तेरे ही फजल से चलता हूँ (हस्नेहसी)

**जब सवार होने लगे तो यह पढ़े:**

किसी चीज़ पर सवार हो तो **बिस्मिल्लाह** कहे और जब बैठ जाए तो **अलहम्दु लिल्लाह** कहे फिर यह दुआ पढ़े-

**سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِبِينَ**  
सुब्हानल्लाज़ी सख़्ख़र लना हाज़ा व मा कुब्बाना लहु मुक़रिबीन।

**तर्जिमा-** अल्लाह पाक है जिसने इसको हमारे कब्ज़ा में कर दिया और हम उसकी कुदरत के बग़ैर इसको कब्ज़ा में करने वाले न थे।

**जब कोई ने अम्रत मिले तो यह पढ़े:**

**الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي بِنِعْمَتِهِ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُ**  
अलहम्दु लिल्लाहिल लज़ी बि ने अमतिही ततिम्गुस्सालिहात

**तर्जिमा-** तमाम ताअरीफें उस अल्लाह के लए हैं जिसकी ने अम्रत से अच्छी चीज़ें मुकम्मल होती हैं।

**आईना देखकर यह पढ़े:**

**الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي كَمَا حَسَنَتْ خَلْقِي فَحَسَّنْ خَلْقِي**  
अलहम्दु लिल्लाहि अल्लाहुम्-म कमा हस्सन्त खल्कि फ़हस्सन् खल्की०

**तर्जिमा-** ऐ अल्लाह जिस तरह तू ने मेरी ज़ाहिरी सूरत अच्छी बनायी उसी तरह मेरी आदत व सूरत भी अच्छी बना दे।

**आँखों में सुर्मा लगाते वक्त:**

**اللَّهُمَّ مَتِّعْنِي بِالسَّمْعِ وَالْبَصَرِ**

**अल्लाहुम्म मति अनी बिस्समए वल बसरि**

**तर्जिमा-** ऐ अल्लाह मुझे फायदा दे कान और आँख से मुसीबत के वक्त यह पढ़े:

**إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ**

**इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन**

**तर्जिमा-** हम अल्लाह के हैं और उसी की तरफ लौट कर जाना है।

**يَغْفِرُ اللَّهُ لَكَ وَلَكَو**  
**ग़फ़िरुल्लाहु लना व लकुम**

**तर्जिमा-** अल्लाह हमारी और तुम्हारी ग़फ़िरत करे खाली घर में दाखिल होते वक्त:

**الصَّلَاةَ وَالسَّلَامَ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ**

**अस्सलातु वस्सलामु अलै क या रसूलल्लाह**

**तर्जिमा-** ऐ अल्लाह के रसूल आप पर दुरूद व सलाम हो।

**दुरूदे ख़ास**

**सल्लल्लाहु अलै-क या मुहम्मदु**

**नुरम-मिन् नूरिल्लाहि**

कोई रंज या मुसीबत आ जाए तो सिद्क दिल से इस दुरूद पाक को पढ़ने से हर क़िस्म की मुसीबतें, तकलीफें और रंज व ग़म ख़त्म हो जाते हैं।



## दुरुदे जुम्आ

صَلَّى اللَّهُ عَلَى النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَالْأَنْبِيَاءِ وَسَلَّمَ  
وَسَلَّمَ صَلَاةً وَسَلَامًا عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ

सल्लल्लाहु अलन नबीइल उम्मीये व आलिही  
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सलातवै व सलामन  
अलैक या रसूलल्लाह

जो शख्स हुजुरे अवदस सल्लल्लाहु तआला अलैह  
वसल्लम से सच्ची मुहब्बत रखे, तमाम जहान से ज्यादा  
हुजुर की अजमत दिल में जमाए हुजुर की शान घटाने वालों  
बद मजहबों से बेजार और उन से दूर रहे वह अगर इस  
दुरुदे मक्बूल को हर रोज या बरोजे जुम्आ बाद नमाजे  
फत्र या बाद नमाजे जुम्आ मदीना तय्यिबा की जानिब  
यानी किल्ला से दाहिने हाथ तिर्छे दस्त बस्ता खड़े होकर  
पढ़े बेशुमार सवाब पाए इस दुरुद को एक बार पढ़ने से  
900 दुरुद का सवाब मिलता है तो जिसने 900 बार पढ़ा  
गोया दस हजार मरतबा दुरुद पढ़ने का सवाब पाया बेहतर  
है कि बाद नमाजे जुम्आ दो चार दस बीस आदमी मिलकर  
पढ़ें।

**फजाइल व फवाइद:** इसके 80 फायदे हैं जो मुअत्तबर  
हदीसों से साबित हैं यहाँ चन्द जिक्र किये जाते हैं : (१)  
इस दुरुद शरीफ के पढ़ने वाले पर खुदाए  
तआला तीन हजार रहमतें नाजिल फरमाएगा  
(२) उस पर दो हजार बार अपना सलाम  
भेजेगा (३) पाँच हजार नेकियाँ उसके नामाए  
आमाल में लिखेगा (४) पाँच हजार गुनाह

मुआफ फरमाएगा (५) उसके माथे पर लिख  
देगा कि यह दोजख से आजाद है (६) अल्लाह  
उसे क्यामत के दिन शहीदों के साथ रखेगा  
(७) उसके माल में तरक्की और बरकत देगा  
(८) उसकी औलाद और औलाद की औलाद में  
बरकत देगा (९) दुश्मनों पर गर्ल्हा देगा (१०)  
दिलों में उसकी मुहब्बत रखेगा (११) किसी  
दिन खाब में बरकते जियारते अवदस से  
मुशर्रफ होगा (१२) ईमान पर स्वातिमा होगा  
(१३) क्यामत में हुजुर की शफाअत नसीब  
होगी (१४) अल्लाह तआला उससे ऐसा राजी  
होगा कि कभी नाराज न होगा।

## इस्मे आजम

अल्ला हुम्-म इब्नी अरअलु-क बि अन्न-क  
अन्तल्लाहु ला इला-ह इल्ला अन्तल्  
अहदुरसमदुल्लाजी लम य लिद व लम् यूलद वे  
लम् य कुल्लहु कुफुवन अहद०

अल्ला हुम्-म इब्नी अरअलु-क बि  
अन्-न लकल् हम्दु ला इला-ह अन्तल्  
हन्नानुल् मन्नानु बदी ऊरसमावाति  
वल्अर्दि या जल जलालि वलइकरामि या हस्यु  
या कस्युम् अरअलु-क व इलाहुकम् इला हुव्  
वाहिद० ला इला-ह हुवरहमानुरहीम० अलिफ  
लाम मीम० अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हुवल  
हस्युल कस्युम् ला इला-ह इल्ला अन्-त सुब्हा-  
न-क इब्नी कुन्तु मिनज़ालिमीन०



## अस्नाद दुआ-ए-गब्जुल अर्श

रिवायत है कि एक दफा हज़रत रसूल खुदा **सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम्** मसजिद में तशरीफ रखते थे कि नागाह **जिब्रईल अलैहिस्सलाम** आये और फज़ाइल इसके बयान किये। इस तूल व तवील अस्नाद को हज़फ करके कम करके पढ़ने वालों के हुस्ने एतफ़ाद व रुसखे अक़ीदत पर छोड़ दिया जाता है और तबर्कन इसका लब्बे लुबाबी असल नतीजा लिखा जाता है कि जिब्रईल ने मिनज़ुम्ला इन फज़ाइल के यह भी फर्माया कि क़ारी को इस दुआ के ज़रिये से हक़ तआला तीन चीज़ें, इनायत फरमाएगा अव्वल उसकी रोजी में बरकत देगा दूसरे उस को ग़ैब से रोजी मरहमत् फरमाएगा तीसरे उसके दुश्मन आजिज़ रहेंगे। और जो कोई इस दुआ को पढ़ा करेगा या अपने पास रखेगा तो अल्लाह की रहमत उस पर नाज़िल होगी और मैदाने जंग में गालिब रहेगा और सफर से सही सलामत मज़ गनीमत घर आवेगा और यह बरकत इस दुआ के जादू और शैतानों के शर से और सभी बलाओं से जमीनी, आसमानी से महफूज रहेगा इसको धोकर अव्वल बारिश के पानी से मसहूर, जादू वाले मरीज को पिलाये तो शिफा होगी और इस ताअवीज को धोकर ऐसे शख्स को हर रोज पिलाया जाये कि जिसकी बीमारी ने इलाज करने वाले को हेरान कर रखा हो तो खुदा के फज्लोकरम से जल्द शिफा हो और बे औलाद वाले को इसका तावीज मुश्क व जाफरान से लिख कर २१ इक्कीस रोज पिलाया जाये तो साहिबे औलाद हो और इसकी बरकत से उम्मीद है क़यामत के रोज ऐसा दरजा बुलन्द पायेगा कि और लोग इस दर्जा की तमन्ना करेंगे और इसका पढ़ने वाला कभी रास्ता न भूलेगा। अल्मरज इस दुआ-ए बुजुर्गवार की कोई क्या खूबी और तारीफ बयान कर सकता है अगर सात आसमान और सात जमीन के कागज बनाये जाए और जमीन के पेड़ों के कलम हों और कुल मख्लूक़ात पैदा की हुयी आसमान व जमीन अजल से अबद तक इसकी तारीफ लिखते रहें तो भी एक हर्फ़ की तारीफ़ पूरी न हो, न कि कुल की। इसमें रैब व शक़ को दखल नहीं।

## دُعَا كُنْج العَرْشِ دُआए गंजुल अर्श

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल मलिकिल कुददूसि  
 لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल अज़ीज़िल जब्बारि  
 لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ سُبْحَانَ الْعَزِيزِ الْجَبَّارِ  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानर रऊफिर रहीमि  
 لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ سُبْحَانَ الرَّؤُوفِ الرَّحِيمِ  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल ग़फूरिल रहीमि  
 لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ سُبْحَانَ الْغَفُورِ الرَّحِيمِ  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल करीमिल हकीमि  
 لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ سُبْحَانَ الْكَرِيمِ الْحَكِيمِ  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल क़वीयिल वफ़कीये  
 لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ سُبْحَانَ الْقَوِيِّ الْوَكِيلِ  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल लतीफ़िल ख़बिरि  
 لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ سُبْحَانَ اللَّطِيفِ الْخَبِيرِ  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानस स मदिल मअबूदि  
 لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ سُبْحَانَ الصَّمَدِ الْبَعُودِ  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल ग़फूरिल वदूदि  
 لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ سُبْحَانَ الْغَفُورِ الْوَدُودِ  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल वकीलील कफ़ीली  
 لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ سُبْحَانَ الْوَكِيلِ الْكَافِي  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानर रक़ीबिल हफ़ीज़ि  
 لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ سُبْحَانَ الرَّقِيبِ الْحَفِيزِ  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानद्दाए मिल क़ाडिमि  
 لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ سُبْحَانَ الدَّائِمِ الْقَائِمِ  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल मुहय्यिल मुमीती  
 لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ سُبْحَانَ الْمُحْيِي الْمُمِيتِ  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल हय्यिल कय्यूमि  
 لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ سُبْحَانَ الْحَيِّ الْقَيُّومِ  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल ख़ालि कि बारिए  
 لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ سُبْحَانَ الْخَالِقِ الْبَارِئِ  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल अलीइल अज़ीमि  
 لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ سُبْحَانَ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानलत वाहिदिल अ ह दि  
 لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ سُبْحَانَ الْوَاحِدِ الْأَحَدِ  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल मुअमिनिल मुहयमिनि  
 لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ سُبْحَانَ الْمُؤْمِنِ الْمُؤْمِنِ  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल हसीबिश शहीदि  
 لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ سُبْحَانَ الْحَسِيبِ الشَّهِيدِ  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल हलीमिल करीमि  
 لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ سُبْحَانَ الْخَلِيمِ الْكَرِيمِ  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल अव्वलिल क़दीमि  
 لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ سُبْحَانَ الْأَوَّلِ الْقَدِيمِ  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल अव्वलिल आखिरि  
 لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ سُبْحَانَ الْأَوَّلِ الْآخِرِ  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानज़ ज़ाहिरिल बातिनि  
 لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ سُبْحَانَ الظَّاهِرِ الْبَاطِنِ  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल कबीरिल मु त आलि  
 لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ سُبْحَانَ الْكَبِيرِ الْمُتَعَالِ



॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल आलिमिल गैबि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल हमीदिल मजीदि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल हकीमिल कदीमि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल क्रादिरिस सत्तारि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानस समीइल अलीमि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल गनीइल अजीमि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल अल्लामीस्सलामी ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल मलिकिन नसीरि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल गनीइर रहमानी ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न करीबिल ह स नाति ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न वलीइल ह स नाति ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानस सबूरिस सत्तारि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल खालिकिन नूरि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल गनीइल मुअजिजि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल फादिलिश शकूरि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल गनीइल कदीमि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न ज़िल जलालिल मुबीनि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल खालिसिल मुख्लिसि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न सादिकिल वाअदि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल हक्किल मुबीनि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न ज़िल कूवतिल मतीनि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल कवीइल अजीजि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न अल्लामिल गुयूबि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल हव्विल लज़ी ला यमूतु ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न सत्तारिल ओयूबि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल गुफरानिल मुस्तआनि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न रब्बिल आलमीन ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानर रहमानिस सत्तारि ॥

॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल क्राजिइल हाजाति ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानर रहमानिर रहीमि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न रब्बिल अशिल अजीमि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न रब्बिल अला ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल बुरहानिस सुलतानि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानस समीइल बसीरि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल वाहिदिल क्रहहारि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल अलीमिल हकीमि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानस सत्तारिल गफ़फ़ारि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानर रहमानिद दय्यानि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल कबीरिल अकबरि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल अलीमिल अल्लामि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानश शाफिल काफ़ी ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल अजीमिल बाक़ी ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानस स म दिल अ ह दि ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न रब्बिल अर्दि वसमावाति ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल खालिकिल मख़्लूक़ाति ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न मन ख़ ल कल्लै ल वन्नहार ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल खालिकीर रज़्ज़ाकी ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल फत्ताहील अलीमी ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल अजीज़ील गनिय्यी ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल गफ़रिशशक़ुरी ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल अजीमिल अलीमी ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हाना ज़ील मुक्की वल्मला कुत्ती ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न ज़िल इज़्ज़ति वल अज़्ज़मति ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न ज़िल हयबति वल कुदरति ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हा न ज़िल किब्रियाए वल ज़ बरसति ॥  
 ॥ ॐ ॥ ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानस सत्तारिल अजीमि ॥



ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानर रहीमिल गफफारि  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल अजीज़िल वहहाबि  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल क़ादिरिल मुक्तदिरि  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हान ज़िल गुफ़रानिल हलीमि  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हान मालिकिल मुल्कि  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल बारिज़िल मुसव्विरि  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल अजीज़िल जब्बारि  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल जब्बारिल मुत्त कब्बिरि  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल्लाहि अम्मा यसिफून  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल कुदूसिस सुब्बूहि  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हान रब्बिल मलाए कति वरसिहि  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हान ज़िल आलाए वन्नअमाए  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल मलिकिल मक़सूदि  
 ला इला ह इल्लल्लाहु सुब्हानल हन्नानिल मन्नानि  
 ला इला ह इल्लल्लाहु आदमु सफ़ीयुल्लाहि  
 लाइला ह इल्लल्लाहु नुहुन नजीयुल्लाहि  
 लाइला ह इल्लल्लाहु इब्राही मु खलीलुल्लाहि  
 लाइला ह इल्लल्लाहु इस्माइलु ज़बीहुल्लाहि  
 लाइला ह इल्लल्लाहु मूसा कलीमुल्लाहि  
 लाइला ह इल्लल्लाहु दाऊदु खलीफतुल्लाहि  
 लाइला ह इल्लल्लाहु ईसा रुहुल्लाहि  
 लाइला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाहि  
 लाइला ह इल्लल्लाहु खैरि खल्केही व नूरे अशोहि  
 अफ़ज़लिल अम्बियाए वल मुरसली न  
 हबीबिना व सय्यदिना व स न दिना व  
 शफ़िएना व मौलाना मुहम्मदिव व अला  
 आलिही व असहा बिही अजमईन बिरहमति  
 \* \* \* क या अरहमर्राहिमीन \* \* \*

# मुनाजात ब दरगाह काजियल- हाज़ात

रोज़ाना सुबह व शाम या हर नमाज़ के बाद इसको पढ़ लिया करे, बेहतर है।

या इलाही हर जगह तेरी अता का साथ हो  
 जब पड़े मुश्किल शहे मुश्किल कुशाका साथहो  
 या इलाही भूल जाऊँ नज़्म की तकलीफ को  
 शादिये दीदार हुस्ने मुस्तफा का साथ हो  
 या इलाही गोरे तीरह की जब आए सख्त रात  
 उनके प्यारे मुँह की सुब्हे जौफ़िज़ा का साथ हो  
 या इलाही जब पड़े महशरमें शोरे दारो गीर  
 अम्न देने वाले प्यारे पेशवा का साथ हो  
 या इलाही जब जबानें बाहर आएँ प्यास से  
 साहिबे कौसर शहे जूदो अता का साथ हो  
 या इलाही सर्द मोहरी परहो जब खुरशीदे हश्र  
 सय्यदे बे साया के ज़िल्ले लिवा का साथ हो  
 या इलाही गरमिये महशर से जब भड़कें बदन  
 दामने मूहबब की ठंडी हवा का साथ हो  
 या इलाही नामए आमाल जब खुलने लगें  
 औब पोशे खल्क सत्तारे खता का साथ हो  
 या इलाही जब बहें आँखें हिसाबे जुर्म में  
 उन तबस्सुम रेज़ होंटोंकी दुआका साथहो  
 या इलाही जब हिसाबे खंदए बेजा रुलाय  
 चश्मे गिरयाने शफीए मुरतजा का साथहो  
 या इलाही रंग लाएँ जब मेरी बे बाकियाँ  
 उनकी नीची नीची नज़रोंकी हयाका साथहो  
 या इलाही जब चलूँ तारीक राहे पुलसिरात  
 आप्ताबे हाशमी नूरुल हुदा का साथ हो  
 या इलाही जब सरे शम्शीर पर चलना पड़े  
 रब्बे सल्लिम कहने वाले ग़मज़ुदा का साथहो  
 या इलाही जो दुआएँ नेक हम तुझ से करें  
 कुदसियों के लबसे आमी रब्बना का साथ हो  
 या इलाही जब रज़ा खाबे गिराँसे सर उठाय  
 दौलते बेदार इशके मुस्तफा का साथ हो



# तादादे रकशत तस्तीब के साथ

फज्र	जुहर	अस्र	मग़रिब
सुन्नते मुअक्किद: 2	सुन्नते गैर मुअक्किद: 4	सुन्नते मुअक्किद: 4	
फर्ज 2	फर्ज 4	फर्ज 4	फर्ज 3
	सुन्नते मुअक्किद: 2		सुन्नते मुअक्किद: 2
	नफल 2		नफल 2
मजमूई तादाद 4	12	8	7
इशा	जुम्आ	ईदैन	दीगर नमाजें
सुन्नते गैर मुअक्किद: 4	सुन्नते मुअक्किद: 4	वाजिब 2	तरावीह सुन्नते मुअक्किद: 20
फर्ज 4	फर्ज 2		तहज्जुद 8
सुन्नते मुअक्किद: 2	सुन्नते मुअक्किद: 4		इश्राक़ 2
नफल 2	सुन्नते गैर मुअक्किद: 2		चारत 12
वाजिब विन्न 3	नफल 2		अव्वाबीन 6
नफल 2			सलातु तस्बीह 4
मजमूई तादाद 17	14	2	